पंचम अध्याय

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी–पंजाबी उपन्यासों में वर्णित नारी पात्रों की मूल भाव–व्यंजना का मनोवैज्ञानिक विश्ले"ाण

5-1&रागात्मक वृत्ति पर आधृत काम-भावना की विविध रूपों में व्यंजना-

ये मूल प्रवृत्तियां दो प्रकार की होती हैं। रागात्मक एवं विरागात्मक वृत्ति। रागात्मक वृत्ति को फ्रायड ने जीवन मूलक प्रवृत्ति और विरागात्मक को मरण मूलक प्रवृत्ति कहा है। ब्राउन के अनुसार– व्यक्ति का व्यक्तित्व इन्हीं मूल प्रवृत्तियों के संघर्ष का परिणाम है। ये दोनों वृत्तियाँ एक साथ मिलकर सामूहिक रूप से कार्य करती हैं तथा जब तक जीवन मूल प्रवृत्ति होती है व्यक्ति प्रेम निर्माण के कार्यो में व्यस्त रहता है। इस जीवन मूल प्रवृत्ति अथवा रागात्मक वृत्ति के फलस्वरूप ही व्यक्ति प्रजनन करता है, रचनात्मक कार्य करता है तथा अपने एवं अपने समुदाय से प्रेम करता है। फ्रायड ने इसे काम भावना (लिबिडो) के नाम से अभिहित किया है। यह एक ऐसी सृजनात्मक शक्ति है जो व्यक्ति को जीवन के अभीष्ट लक्ष्यों की ओर अग्रसर करती है। सेमन्ड ने इन्हें समायोजन प्रक्रिया का अंग माना है। इन्हें किसी गतिहीन संरचना के रूप में स्वीकार न करके प्रेरणा शक्ति से सम्पन्न गत्यात्मक शक्ति संरचना–रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। ये रागात्मक वृत्तियाँ काम–भावना, मातृभावना, आध्यात्मिक–प्रेम, देश–प्रेम एवं मानव–प्रेम आदि रूपों में व्यक्ति होती है। इन प्रवृत्तियों में आधारित नारी पात्रों का क्रमशः विश्लेषण किया गया है।

5-2 विरागात्मक-वृत्ति पर आधारित भावना-विकर्षण (घृणा) :

विरागात्मक प्रवृत्तियों को फ्रायड ने मरण वृत्तियाँ कहा है। इनके प्रकट एवं प्रबल होने पर व्यक्ति में विध्वंस, मानसिक संताप, आत्महत्या, अहम प्रवृत्ति (स्वप्रतिष्ठापन) उत्पन्न हो जाते हैं। व्यक्ति की वृद्धावस्था में ये प्रवृत्ति अधिक प्रबल हो जाती है। जब ऐसी स्थिति आ जाती है कि ये दोनों प्रवृत्तियाँ परस्पर उदासीन नहीं हो पाती, तब व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। घृणा अथवा विकर्षण व्यक्ति के व्यक्तित्व को अवरुद्ध कर देती है।

हिन्दी–पंजाबी उपन्यासों में रागात्मक वृत्ति पर आधारित मौलिक भावों की जिस व्यापकता से अभिव्यक्ति हुई है, उस व्यापकता के साथ विरागात्मक वृत्ति से सम्बन्धित भावों की अभिव्यंजना नहीं हुई है। तथापि अपेक्षाकृत संक्षिप्त होते हुए भी इन भावों की अभिव्यक्ति उपेक्षणीय नहीं है। मनोविज्ञान में विकर्षण (घृणा) भाव का विवेचन 'द्वेष' के नाम से किया गया है। वेंकटन नाथ का कथन है कि ''द्वेष का स्वरूप दुःखद या हानिप्रद वस्तु के दर्शन से संताप उत्पन्न करने वाला है।''[1] आचार्य भरत मुनि जुगुप्सा या घृणा को अरुचिकर के दर्शन, श्रवण आदि भावों से उत्पन्न मानते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मानना है कि ''मानसिक विषयों की घृणा मन में कुछ अपनी ही क्रिया से आरोपित और कुछ शिक्षा द्वारा प्राप्त आदर्शों के प्रतिकूल विषयों की उपस्थिति से उत्पन्न होती है।''[2]

'कृष्णकली' की पार्वती बड़ी मस्त है। वह अपने हृदय के संचित स्नेह को अब्दुल्ला खान को अर्पित कर चुकी है। फलस्वरूप अविवाहितावस्था में ही वह

गर्भवती हो जाती है। ''अब्दुल्ला खान के सामान्य–रूप के क्षत–विक्षत पौरुष का नाग उसे जाने से पहले ही डस चुका था। न जाने कब, किन बहके क्षणों में उसकी कोख में एक बच्ची पलने लगी। पार्वती की गर्भावस्था का भान होते ही अब्दुल्ला कब चुपचाप खिसक गया, कोई जान भी नहीं पाया।'' कृष्णकली अब्दुल्ला के पलायन के पश्चात विकर्षण से भर उठती है। वह प्रेम से परित्यक्त होकर, समाज से लांछित एवं तिरस्कृत होकर, जीवन के साथ रंग रलियां मनाती है। उसके कुष्ठ–रोग ने उसे ढीठ और निर्लज्ज बना दिया है। वह अपनी कोख में पल रही बच्ची के प्रति भी अतिशय घृणा–भाव रखती है। पार्वती अपनी अजन्मी पुत्री को मारने के षड़यन्त्र को डॉ0 पैद्रिक समक्ष उद्घाटित करते कहती है, ''फिक्र मत करो मेम साहब, तुम्हारे आने से पहले मैं उसको खत्म कर दूँगी।''[3] कृष्णकली के अन्तस में विकर्षण–प्रवृत्ति की अधिकता है इसके कई कारण हैं। उसके प्रियतम का विश्वासघात करना, यौन–ग्रन्थि की अतृप्ति और उसका असाध्य कुष्ठ–रोग इत्यादि।

'सुरंगमा' की सुरंगमा मंत्री दिनकर की पुत्री मिन्नी की शिक्षिका है। वह मिन्नी को टयूशन पढ़ाती है। मंत्री दिनकर सुरंगमा को अबला जान उसका शारीरिक शोषण करता है। सुरंगमा का हृदय अनचाहे शारीरिक शोषण से घृणित हो उठता है। उसे न चाहते हुए भी दिनकर की वासना का शिकार होना पड़ता है। दिनकर उसका कई बार शोषण करता है। जब दिनकर की पत्नी विनीता को यह रहस्योद्घाटित होता है। तब सुरंगमा घृणित भाव से दिनकर द्वारा दिए गए सारे उपहार उसे थमाती है, ''लीजिए इन्हें लेती जाइए मैंने इसमें से एक भी वस्तु की

फरमाइश नहीं की थी....।''[4] सुरंगमा का द्वेष अनायास ही नहीं सायास उत्पन्न किया गया है। वह न चाहते हुए भी दिनकर के यौनात्मक शोषण की शिकार बनती है।

5-3 मातृ–भावना और वात्सल्य :

प्रजनन–प्रवृत्ति प्रकृति की अत्यन्त सुन्दर और उज्ज्वल देन है। काम और प्रजनन–प्रवृत्ति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। विलियम मैक्डूगल के अनुसार ''मातृ–भावना ही प्रकृति की एकमात्र सच्ची उदात्त–वृत्ति है और यह कहना भी अतिश्योक्ति न होगा कि यही एकाकी वृत्ति मानव जीवन में बौद्धिकता एवं नैतिकता की जन्मदात्री भी है।''[5] 'मातृत्व–प्रवृत्ति मानव के अन्तःकरण में आत्मत्याग की भी आदि संस्थापक प्रवृत्ति है, क्योंकि सर्वप्रथम इसी भावना से प्रेरित होकर मानव अपनी संकुचित अहंपरक वृत्तियों के अवदमन तथा भारी एवं स्वार्थ–रहित परिश्रम के द्वारा संतति पालन के कार्य में अग्रसर होता है।[5]

विलियम मैक्डूगल के अनुसार शिशु में माता–पिता को आकृष्ट करने एवं उनके ध्यान को अपने में रमा रखने की विशेष क्षमता होती है। जिससे माता–पिता में शिशु के प्रति दया, विस्मय, श्लाघा, कृतज्ञता, चिन्ता एवं सहानुभूत्यात्मक सुख–दुःख आदि अनेक भाव उदित होते हैं। वात्सल्य– भाव माता में पिता की अपेक्षा अधिक गहन होता है। शिशु की विविध चेष्टाएं यथा–प्रसन्नता, सुन्दरता, दुर्बलता, चंचलता, सुकुमारता, पीड़ा, अवमानना, शौर्य आदि वात्सल्य भाव को उद्दीप्त करती हैं।

हिन्दी–उपन्यास रचनाकारों ने मातृ–भावना और वात्सल्य का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण किया है। 'आँखों की दहलीज' की तालिया को जब माँ न बन सकने का पता चलता है, तब वह अवसादग्रस्त हो जाती है। मातृत्व–प्राप्ति के लिए वह अपने शील को भंग कर जावेद से रास–लीला करती है, किन्तु फिर भी मातृत्व–सुख की उपलब्धि से वह वंचित रह जाती है।

'श्मशान चम्पा' की भगवती अपनी पुत्री जुही के मुस्लिम के साथ पलायन करने पर भी पुत्री के दोष को छिपाने का प्रयास करती है। पति के देहावसान की अतिशय पीड़ा के समय भी वह बड़े चातुर्य–भाव से अपनी ननद रूक्की को कहती है। जुही तो अस्पताल में पड़ी है। पैर की हड्डी टूट गई है, किन्तु जुही के पलायन की बात समाज में आग की भाँति फैल गई। भगवती को बिरादरी अपमानित कर दूध की मक्खी की तरह निकालकर दूर पटक देती है। चम्पा की सगाई भी टूट जाती है, किन्तु फिर भी वह साहस नहीं छोड़ती। वह अपनी पुत्री चम्पा से अपनी अस्वस्थता छिपाकर, अपने चेहरे को उत्फुल्ल बनाने की चेष्टा करती है। रोग की अधिकता के कारण सेनेटोरियम जाते समय उसे पुत्री चम्पा की ही चिन्ता व्यथित करती है कि कैसे उसकी पुत्री निर्जन वन में अकेली रहेगी, किन्तु कमलेश्वरी आश्वासन देती है कि ''आपको पहाड़ पहुँचाकर चम्पा मेरी कोठी में आ जायेगी। उसे हम पलकों पर बिठाकर रखेगें।''[7] माता भवगती इस आश्वासन के पश्चात भी अपने पत्रों में प्रवासिनी चम्पा को लेकर घनीभूत चिन्ता व्यक्त करती। वह अपने स्वास्थ्य के विषय में कभी पुत्री को एक शब्द भी नहीं लिखती है। भगवती का यह मातृ–भाव और वत्सलता अपने अन्तस में विविध संवेदनाएं समेटे हुए है।

'किशनुली' की काखी मातृत्व बनने में असमर्थ है। वह मातृत्व–सुख को पाने के लिए विक्षिप्त किशना के पुत्र कर्ण को गोद लेती है। वह कर्ण के जन्मोत्सव पर खुशी से झूमकर ढोलक बजाकर सोहर गाती है। ''.....सचमुच ही काखी की शिशु अधर वंचिता छाती से अपने नन्हें, क्षुधातुर अधर सटाये, किशनी का ठाट चुपचाप सो रहा था।''[8] काखी कर्ण पर सम्पूर्ण ममत्व उड़ेलती है। ''उसने मेरा दूध पिया है, आज कौन करेगा विश्वास? पर जब वह अपना नन्हा मुँह मेरी छाती से सटाता, मेरी छातियाँ चड़कने लगती और सच कहती हूँ चेली, चप–चपकर वह घूँट घटकता सो जाता था। इसी से तो इतनी मोह–माया है उसे।''[9] वह कर्ण को लिखती है ''देख रे करनिया, तू कहीं भी रहे, तुझे अब आना ही पड़ेगा। भले ही हवाई जहाज में क्यों न आए। मुझे कंधा तू ही देगा, चाहे मेरी मिट्टी को एक दो दिन रोकना पड़े।''[10]

'कृष्णकली' की अम्मा की तीन सन्तानें हैं। दो पुत्रियां जया, माया एवं पुत्र प्रवीर है। प्रवीर को अम्मा ने सुसंस्कार देकर, उसका भरण–पोषण किया। प्रवीर ने अंग्रेजी साहित्य में परास्नातक डिग्री ली। वह विदेश–भ्रमण पश्चात भी अपने संस्कारों के प्रति समर्पित है इसलिए अम्मा गर्वित हो कहती है, ''मेरा लल्ला, मेरा संस्कारी बेटा है। जब देश–विदेश घूमकर भी उसका जनेऊ उसके साथ रहा तो क्या वह अपनी देहरी में लौटकर उसे तोड़ देगा.....अंग्रेजी साहित्य में एम0ए0 करने पर भी वह संस्कृत का प्रकांड विद्वान था।''[11] अम्मा अपने वात्सल्य से अपनी सन्तान को आप्लावित कर एक आदर्श मातृ–रूप को प्रस्तुत करती है।

'जिन्दगीनामा' की शाहनी मातृत्व की लालसा से लालायित है। सन्तान की प्राप्ति के लिए वह कई मनौतियाँ मानती है। ईश्वरीय अनुकम्पा से पुत्र–रत्न की प्राप्ति पर वह फूली नहीं समाती। मातृत्व–सुखानंद पुत्र को स्तनपान कराने में ही प्राप्त होता है। शाहनी भी पुत्र को दुग्ध–पान करा, स्वयं को धन्य समझती है। ''मुँह से थन निकाल, आँचरू से बच्चे का मुँह पोंछा तो गाय सी दुधारू आत्मा तृप्त हो गयी। वाह गुरु, सब आपकी बरकते। देह प्राण वाली जिस माता ने हाथों अपना लाल नहीं झुलाया, अपना दूध नहीं पिलाया, वह जिन्द जहानवाली महतारी तो न हुई।''[12] जिन्दगीनामा की शाहनी वात्सल्य और ममता की प्रतिमूर्ति है।

'भैरवी' की रुकमणी की तीन सन्तानें हैं। उसके दो पुत्र चन्द्रगुप्त एवं विक्रम तथा एक पुत्री सोनिया है। उसने अपनी सन्तानों की परवरिश और शिक्षा में कोई भी कमी नहीं छोड़ी। रुकमणी आधुनिक–सभ्यता की नारी है। किसी कारण उसका पुत्र विक्रम माँ से रुष्ट हो जाता है। वह अपने नास्तिक विक्रम को पाने के लिए कई व्रत–अनुष्ठान करती है। वह धीरे–धीरे आस्तिक बनती चली जा रही थी। विक्रम की खुशी के लिए शरद–रात्रि में अल्मोड़ा जाती है। रुकमणी विक्रम के लिए उसकी पसंद चंदन से उसका परिणय करके खो चुके पुत्र–स्नेह को पाना चाहती है। वह यह अभिलाषा करती है कि अगर चंदन उसके पुत्र को माँ की ममता के लिए प्रेरणा दे तब वह चंदन की सदैव ऋणी रहेगी। सहृदय रुकमणी पुत्र–स्नेह पाने के लिए प्रत्येक कार्य करने के लिए तत्पर दिखाई पड़ती है।

'चौदह फेरे' की नन्दी की एकमात्र पुत्री अहल्या है। कर्नल अशिक्षित नन्दी को पत्नीत्व–पद देने में असमर्थ है। कर्नल पुत्री अहल्या को मद्रास हास्टल में

डालना चाहते हैं। नन्दी का वात्सल्य पुत्री ममता के स्नेह से वंचित हो जाने की कल्पना मात्र से ही विह्वल हो उठता है। उसे आघात होता है ''उसकी अहल्या जिसकी ममता का आधार लेकर उसने अपनी दुर्दिन की घड़ियाँ काट ली थी, उससे छीन ली गई थी।''[13] पुत्री के हास्टल में चले जाने के आघात को नन्दी सहन नहीं कर सकी। वह अवसादग्रस्त हो जाती है। नन्दी शनैः–शनैः गृहस्थी से भी विरक्त हो जाती है।

'चल खुसरो घर आपने' की गोदी दो पुत्रियाँ कुमुद और उमा एवं एक पुत्र लल्लू की माँ है। दुर्भाग्य से पति का देहावसान हो जाने पर उसे वैधव्य का दंश झेलना पड़ता है। पिता के देहान्त–पश्चात बच्चों की वह बड़े परिश्रम से परवरिश करती है। किन्तु कुसंगति के दुष्प्रभाव के कारण, उसकी पुत्री कुपथगामिनी बनती है पुत्री के हिरासत में होने पर वह बड़े साहस से पुलिस से पूछती है '' पर क्या किया है मेरी बच्ची ने, जो तुमने उसे थाने में बंद कर दिया है?''[14] गोदी का पुत्र लल्लू भी आवारा एवं बदचलन हो जाता है। सन्तानों का हीन–चरित्र गोदी के ममत्व और वात्सल्य को अत्यधिक ठेस पहुँचाता है। वह सदैव अपनी सन्तान के लिए ही चिन्तातुर रहती है। सन्तानों का चारित्रिक–पतन उसे अवसाद की स्थिति में ले जाता है। वह सन्तानों को सद्मार्ग पर लाने के लिए अथक प्रयास करती दिखाई देती है, किन्तु सफलता उससे कोसों दूर है।

'सुरंगमा' की वैरोनिका म्यूरी ऐसी माता है जो त्याग की प्रतिमूर्ति है। उसका पुत्र माइक असामान्य एवं अस्वाभाविक है। वैरोनिका अपने एबनार्मल पुत्र की

अत्यधिक सेवा–सुश्रूषा करती है। वह उसका बिस्तर बदलती उसको स्पंज देती, उसके वस्त्र बदलती, उसकी दाढ़ी बनाती है और उसको भोजन करवाती है। वह पुत्र के सम्पूर्ण दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर, अपनी ड्यूटी पर जाती है। वैरोनिका ने अपनी सभी आवश्यकताओं एवं अभिलाषाओं को सीमित कर लिया था। वह अपने पुत्र माइक को प्राथमिकता देती थी। इसलिए उसने अपना जीवन स्व–पुत्र की धरोहर बना दिया था। एक बार वह पिक्चर जाती है। उसकी अनुपस्थिति में माइक की मृत्यु हो जाती है। वैरोनिका त्रासित होकर कहती है ''हे भगवान! मैं यहाँ पिक्चर देखकर ऐश मना रही थी और मेरा बच्चा चला गया.....विदाउट सेइंग गुडबाई। ओह, माई सन, माई सन !....''[15] उसके इन उद्‌गारों से स्पष्ट है कि वैरोनिका का सम्पूर्ण वात्सल्य माइक के प्रति समर्पित था।

'आपका बंटी' की शकुन की इकलौती सन्तान बंटी है। शकुन अपना संपूर्ण स्नेह एक मात्र पुत्र बंटी पर न्यौच्छावर कर, कहती है ''मेरा तो बेटा भी यही है और बेटी भी यही है। ''हंसती हुई ममी मुझे अपने से और ज्यादा सटा लेती है। .....ममी निहाल होकर उसे बाँहों में भर लेती और उसके गालों पर ढ़ेर सारे किस्सू देती। फिर पता नहीं छत में क्या देखने लगती। बस, फिर देखती ही रह जाती और उसे लगता जैसे उसके और ममी के बीच में फिर कहीं कोई आ गया है। पर कौन? यह वह न समझ पाता। ममी के चेहरे पर गहराती हुई उदासी की परतें उसे कहीं हलके से बेचैन कर देतीं। उसका मन करता कि ममी को पक्की तरह समझा दे कि वह उन्हें कब्भी–कब्भी नहीं छोड़ेगा। पर कैसे? और जब कुछ भी समझ में नहीं

आता तो वह ममी के गले में हाथ डालकर लिपट जाता।''[16] बंटी शकुन की आत्मा है। जब बंटी को हास्टल में भेजने की चर्चा होती है तब वह क्रोधित होकर कहती है, ''सात–साल से मैं अकेली ही तो बंटी को पाल रही हूँ। उसका हित अहित मैं दूसरों से ज्यादा जानती हूँ।''[17] शकुन डॉ0 जोशी से पुनर्विवाह कर लेती है। वह अपनी आँखों के तारे बंटी को भी साथ ले जाती है। बंटी जो अभी तक अपने मातृत्व–स्नेह का एकाकी हकदार था। मातृत्व–स्नेह के बँट जाने से, वह आक्रान्त हो उठता है। बंटी को आघात पहुँचता है और वह पापा के पास कलकत्ते चला जाता है। पुत्र–विरह शकुन को असहाय बना देता है। उसकी ममता रोती और व्यथित होती है। शकुन का वात्सल्य पग–पग पर पराजय और कुंठा का दंश झेलता है। शकुन पति से कभी भी पराजित नहीं होती लेकिन पुत्र की ममता समक्ष सदैव नतमस्तक होती है।

पंजाबी–उपन्यासकारों ने भी माँ के ममतामयी रूप का चित्रांकन किया है। 'कच्ची सड़क' की दम्मो दो सन्तानों की माँ है। उसने अत्यधिक स्नेह से अपने बच्चों का लालन–पालन किया। मीना जब किसी कार्य से बाहर जाती है। तब माता को असहनीय है कि उसकी पुत्री बाहर का खराब भोज्य–पदार्थ खाए। वह मीना से कहती है, 'रास्ते में खराब रोटी खाओगी मैं आलू के परांठे बनाकर दे दूँगी, ये सूखते नहीं।' माँ की ममता ही है जो स्वयं कष्ट सह कर अपनी सन्तान को संसार के सम्पूर्ण सुख–सुविधाएं देना चाहती है। दम्मो का व्यक्तित्व भी माता की सभी संवेदनाओं से ओत–प्रोत है।

'रंग दा पत्ता' की मित्तरो की माँ का हृदय ममता का सागर है। मित्तरो के अपहरण के पश्चात माता की स्थिति दयनीय हो जाती है। वह अपनी पुत्री को पाने के लिए व्याकुल हो उठती है। वह सड़कों की खाक छानती, स्थान–स्थान पर भटकती है कि शायद उसकी बेटी का कोई सुराग मिल जाए। उसे रात्रि में नींद नहीं आती। वह पूरी रात तारे गिन कर व्यतीत करती और फिर प्रातःकाल अपनी आत्मजा की खोज हेतु दर–दर भटकती है। उसका मातृत्व पुत्री विरह में करुणाप्लावित एवं व्यथित होता है।

'यात्री' के कृपापात्र की माँ सन्तान–प्राप्ति के लिए कई व्रत–अनुष्ठान करती है। कई मनौतियों के पश्चात उसे पुत्र कृपापात्र की प्राप्ति होती है। मनौती के कारण माता अपने पुत्र कृपापात्र को शिव चरणों में अर्पित कर देती है, किन्तु कृपापात्र को अपनी माता का यह समर्पण कुकृत्य लगता है। अतः कृपापात्र का अन्तस वितृष्णा से भर उठता है। वह अपनी माता से घृणा करने लगता है। माता का हृदय पुत्र–मुख देखने के लिए व्याकुल है। वह मन्दिर–द्वार तक जाती है, लेकिन पुत्र–उपेक्षा के कारण उसे नैराश्य होना पड़ता है। कृपापात्र को जब अपनी माता के गम्भीर स्वास्थ्य की सूचना मिलती है तब सुप्त पुत्र–स्नेह जाग्रत हो जाता है। कृपापात्र अपनी माता के सम्मुख जाता है। पुत्र को समीप पा वह गद्‌गद् स्वर से कहती है, ''मुझे पता था, एक दिन मुझे अग्निकुंड में नहाना होगा.....कभी किसी पति की आज्ञा थी आज पुत्र की आज्ञा है।''[18] कृपापात्र की माँ पुत्र–स्नेह से व्याकुल है। वह आजीवन पुत्र–प्रेम–प्राप्ति हेतु व्याकुल एवं व्यग्र रहती है। उसका यह दयनीय ममत्व अतिशय हृदय विदारक है।

'इक सवाल' की साहनी जगदीश की माता है। ममता माँ का प्राथमिक गुण है। वह बड़े स्नेह से जगदीश का लालन–पालन करती है। जगदीश को निहारने के लिए वह बेचैन है ''.....माँ द फेर साहविच साह आया कमरे दे हनेरे नू फरोल के माँ ने आखिया मेरा दीपा किथे वे?''**19** साहनी अपने जगदीश को अपने हाथों से भोजन करवाना चाहती है ''फेर में खोरे तेनू आपणे हॅथी कुझ खुआणा ऐ कि नहीं जा मेरिया सूरजा खूह तो इक तारी ला आ.....''**20** अस्वस्थ होने पर भी साहनी की यही अभिलाषा है कि वह अपने हाथों से अपने पुत्र को भोजन कराए। पुत्र के प्रति मातृ हृदय का प्रेम–संवेग उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है। साहनी के अन्तस में पुत्र के प्रति अत्यधिक ममता है।

'उन्हां दी कहाणी' की रत्ना जब गर्भवती होती है तब उसका पति राजू खुशी से फूला नहीं समाता। रत्ना के गर्भाशय में जब उसके शिशु की हलचल होती है तब जिन्दगी की ठंडी और गर्म लहरें उसके बदन को छू जाती हैं। एक लहर बदन को ठंडक पहुँचाती है कि वह एक गणिका चम्पा से रत्ना बनी और उसे मातृत्व सुख का सुअवसर प्राप्त हुआ। दूसरी गर्म लहर से वह उदासीन हो उठती है उसका कोई अपना घर नहीं होगा। उसका शिशु जंगलों में मारा–मारा भटकेगा। सच्चा मातृत्व स्वार्थ–रहित, विशुद्ध त्याग एवं प्रेम युक्त होता है। रत्ना ने पुत्री बेला को जन्म दिया। माता रत्ना पुत्री बेला को शिक्षित करने की अभिलाषा हृदय में समेटे है। उसकी पुत्री पढ़लिखकर सुशिक्षित हो इसलिए वह बेटी बेला को शहर में साहणी के यहाँ भेज देती है। रत्ना, पुत्री की कुशलता पाते ही राहत की सांस लेती है। वह पुत्री–विरह में उसकी तस्वीर को देखकर ही संतोष की सांस लेती है, ''बस

वेख के मोड़ देवांगी इक वारी उसदी हुण दी तस्वीर देखी ता पता नहीं किनीआं हसरता उहदीआं अखाँ विच भर गईआं.....।''[21] मातृ–हृदय शिशु के क्रिया–कलापों को जानने के लिए उत्सुक रहता है। यही उद्‌गार रत्ना के हृदय में भी है। वह बेला के क्रिया–कलापों को देखने में असमर्थ है, क्योंकि बेला उससे कोसों दूर शहर में शिक्षा प्राप्त करने गई है। उसके विरह–क्षणों में वह उसकी तस्वीर देखकर ही उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

'तर्कस टंगिआ जंड' की रूक्की महान मातृत्व–प्रेम से आपूरित है। वह अपने हृदय में विशाल वत्सलता समेटे है। इसी ममता और वत्सलता से वह अपने पुत्र शीरू को शिक्षित करना चाहती है। शीरू जब पाठशाला जाने लगता है तब वह स्नेहपूर्वक कहती है ''ले पुत.....रोटी चाह नाल लाह दिआं....।''[22] रूक्की शीरू के पास होने की खुशी में बताशे बाँटती है। ''सुख नाल मेरा शीरू तेरे मुंडे दा हाणी आ....सतवीं पास कर लई आ ऐंवे नी आपणे लालच पिछे मुंडे दे हॅड रोले...पढ़ा लिखा के जून सुधार देऊँ...।''[23] रूक्की त्यागमयी माँ है। ''मातृत्व प्रेम महान है। इस विनश्वर संसार में ईश्वर का प्रेम पाने के लिये माता का प्रेम निकटतम साधना है। मातृत्व में स्वार्थ–शून्यता, सहिष्णुता और क्षमाशीलता का भाव होता है।''[24]

5-4 आध्यात्मिक प्रेम:

धर्म एक मौलिक प्रवृत्ति है। धार्मिक–भावना का प्रारम्भिक विकास प्रकृति–तत्वों की दैवीय कल्पना के माध्यम से हुआ है। धर्म लौकिक दृष्टि से आध्यात्मिक दृष्टि से निःश्रेयस प्रदान करने वाला तत्व है। जहाँ तक धर्म की

उपन्यासों में अभिव्यक्ति का प्रश्न है तो महिला–उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में इसका विस्तार से चित्रण किया है। लौकिक धर्म के अन्तर्गत देश–प्रेम, स्नेह, मानव–प्रेम, दया, त्याग आदि मानव की उदात्त एवं जीवनोत्कर्षकारी प्रवृत्तियों का चित्रण किया है।

'श्मशान चम्पा' की जया और चम्पा दोनों ही डॉ0 मधुकर के प्रति आकर्षण–ग्रन्थि से आबद्ध हैं। यद्यपि डॉ0 मधुकर चम्पा के प्रति आकर्षित है। डॉ0 मधुकर के प्रति जया का प्रेम एकाकी है। मधुकर जब भी अवकाश में घर आता जया कभी काल्पनिक सिरदर्द और पेट–दर्द की विकट यंत्रणा से छटपटाने का अभिनय करती। वह माँ को मधुकर को बुलाने भेजती। जब मधुकर निन्द्रा से उठकर उसे देखने आता तो उसकी चौड़ी हथेली का स्पर्श, नरम–नरम गोरे पेट पर पड़ते ही, उसकी देह थर–थर कर काँप उठती। चम्पा और मधुकर की सगाई हो जाती है, लेकिन चम्पा की बहन जूही के मुस्लिम के साथ पलायन कर जाने से यह सगाई टूट जाती है। जया को जब चम्पा और मधुकर की सगाई टूटने का समाचार मिला, ''तो वह भागकर जाखन देवी के मन्दिर में घृत–जोत जला आई थी। इसी मन्दिर ने न जाने कितने बिछुड़े हृदयों को अपनी दिव्य शक्ति से कई बार फिर मिला दिया था। आज उसी देवी की कृपा से मधुकर की माँ उसकी कुंड़ली मांगने स्वयं उसके घर आ गई थी।''[25] ईश्वरीय अनुकम्पा से जया और मधुकर परिणय–सूत्र में बंध जाते हैं।

'मायापुरी' की शोभा अपने मकान–मालिक के पुत्र सतीश से अनुराग करती है, लेकिन सतीश का परिणय राज्यपाल की पुत्री से हो गया। शोभा के सम्पूर्ण

स्वप्न अपूर्ण रह गये। उसका अनुराग अपराजित हो गया। वह अपने प्रियतम की मूर्ति अपने मन–मंदिर में सजा उसकी पूजा–अर्चना करने लगती है। एक दिन उसकी पूजा सार्थक होती है। शोभा का प्रियतम उसे नैनीताल में मिलता है। नैनीताल में वह प्रणय–लीला रचाते हैं। शोभा का यह मिलन अन्तिम मिलन बन जाता है। सतीश का वायुयान क्षतिग्रस्त हो जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है।

'चौदह फेरे' की नंदी अपनी पुत्री अहल्या से अत्यधिक स्नेह करती है। नंदी अशिक्षित है इसलिए उसे पति कर्नल से सदैव उपेक्षा एवं प्रताड़ना ही मिलती है। ''मानव, हृदय में अनेक भाव एवं विचार रहते हैं। उन विचारों एवं भावों के गुण–दोष मस्तिष्क और हृदय के दो पाटों के बीच में पिसते हैं। पात्र के जीवन में उत्थान–पतन एवं परिवर्तन करने वाली इस अटूट श्रृंखला का नाम अन्तर्द्वन्द्व है। ..... द्वन्द्व मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। (1) एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के बीच द्वन्द्व। (2) शुभ और अशुभ विचारों में द्वन्द्व। (3) एक ही पात्र के अनेक विचारों में द्वन्द्व।''[26] नंदी भी अन्तर्द्वन्द्व की शिकार है। उसका अन्तर्द्वन्द्व शुभ और अशुभ विचारों में है। वह पुत्री अहल्या पर अपने सम्पूर्ण–संवेग केन्द्रित करती है और जब पुत्री अहल्या को शिक्षार्थ हास्टल में भेजने की सूचना पाती है तब वह उसके विरह–क्षणों की कल्पना से आक्रान्त हो जाती है। नन्दी अपने को नितान्त अकेला महसूस कर, भय–त्रसित हो, ईश्वर की शरण में जाती है। वह गृहस्थी से उपराम हो आध्यात्मिकता की ओर प्रवृत्त होती है। नंदी अध्यात्म में ही स्वयं को सुरक्षित समझती है।

पंजाबी रचनाकारों ने भी अपने उपन्यासों में पात्रों की आस्था का चित्रांकन किया है।'डाक्टर देव' की ममता एवं डॉ0 देव दोनों के हृदयों में प्रणयांकुर प्रस्फुटित होता है। प्रेम का पंथ सदैव विधायक है। इसमें अनास्था और वैषम्य का कोई स्थान नहीं है। ममता भी देव से सच्चा और पवित्र प्रेम करती है। वह प्रेम की पुजारिन है। ममता का सम्पूर्ण जीवन प्रेममय है। उसके जीवन में महोत्सव की ऐसी बेला आती है। जब वह उर की अनन्त प्रणय–राशि मानस की मृदुल भावावलियाँ, कोमल–कल्पनाएं और स्वर्णिम स्वप्न किसी के चरणों में बिखरा देना चाहती है। यौवन के उस सुरभित बसन्त में मादकता और प्रेम उसके हृदय को गुदगुदाते हैं। सर्वस्व समर्पण की भावना में नारी आराध्य के चरणों में अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर देती है। ममता को अपने प्रेमी पर दृढ़ विश्वास है। ''नारी में नर के संसर्ग की निसर्ग आकांक्षा होती है। वह नियतिवाद पर विश्वास करती हुई अपने जीवन को यों ही खे लेना चाहती है।''[27] ममता की, स्वीकृति और समर्पण समाज को अमान्य है। इसलिए ममता का पुत्र रंजु उससे विलग कर दिया जाता है और उसको जगदीश के परिणय–सूत्र में बाँध दिया जाता है। विशुद्ध प्रेम में त्याग, बलिदान, कर्त्तव्य, तत्परता, वासनाहीनता की प्रचुरता होती है। ममता का पवित्र प्रेम गुण रहित, कामना रहित और आदर्श है। वह बड़ी निर्भीकता से पति जगदीश से कहती है, '' मुझे टूटी हुई या सम्पूर्ण कोई भी मूर्ति नहीं चाहिए। वह कल्पना का अत्यन्त सुन्दर चित्र बनकर मेरे सामने आया था, मेरे रोम–रोम में समा गया था। वह सिहरन मेरे शरीर में अब तक है। वह मेरी स्मृति है–वही मेरा जीवन है।''[28] ममता नियतिवाद पर

विश्वास करती हुई अपने जीवन को यों ही खे लेना चाहती है। वह पति जगदीश से पुनः कहती है, ''मैं उसे प्राप्त करना नहीं चाहती। मुझे बताया गया कि उसे अब मेरी कोई आवश्यकता नहीं। मैं कन्धों पर ढोया जाने वाला बोझा नहीं हूँ। जीवन के पथ की सहचरी थी, फिर साथ टूट गया, एक दूसरे की आवश्यकता न रही। उसका पथ और है, मेरा पथ और।''[29] ममता डाक्टर देव से जितनी निष्ठा का भाव रखती है। वैसी ही निष्ठा की आशा वह देव से करती है। इसके विपरीत वह अपना सर्वस्व समर्पण कर कुछ भी पाने की आकांक्षा नहीं रखती है। ममता असफल होने पर अन्तर्मुखी और अवसाद की स्थिति में पहुँचकर असामान्य बन जाती है।

'डाक्टर देव' की राजकुमारी दूसरी नारी–पात्र है। वह भी ममता की भांति देव पर अनुरक्त है। वह अपने प्रेम–प्रदर्शन का उपाय खोजती है और देव के जन्मदिन पर उसे एक तस्वीर पेंट करके उपहार स्वरूप भेंट करती है। देव की तस्वीर में वह पुष्प–हार पहनाती है। वह कहती है, ''मैंने सोचा था आपको जन्मदिन पर आपके कंठ में पुष्प माला डालूँगी पर मेरी हिम्मत न हुई। कामेच्छा जीवन का प्रबलतम संवेग है। उसका भाव–संसार नवीन यौन–सम्बन्धों की व्याख्या से विपुल हो उठता है। उन क्षणों में सांसारिक मर्यादाएं एवं सामाजिक बंधन शिथिल हो जाते हैं। प्रेम के आधिक्य में सांसारिक बंधनों का भय समाप्त हो जाता है। मर्यादाओं का समापन ही प्रेमी–प्रेमिका का मिलन बिन्दु है। प्रेम दो भिन्न लिंगी प्राणियों का हार्दिक–बन्धन है। प्रेमिका अपने प्रेम की सफलता प्रेमी की परिणीता बनने में ही पाती है। राजकुमारी भी डाक्टर देव के परिणय–सूत्र में बंधना चाहती है। लेकिन जब उसे डाक्टर देव की पूर्व–प्रेमिका का पता चलता है। तब वह डाक्टर देव की

प्रियतमा से उसकी उपासिका बन गई। राजकुमारी के प्रेम–संवेग का उदात्तीकरण होता है। वह देव से कहती है ''अब तक आप केवल देव थे, अब से गुरुदेव हैं''..... ''प्रेम प्रियतम की खुशी में है। छीन लेने में, अनुचित अधिकार जमा लेने में वास्तविक विजय नहीं है। पंछी पिंजड़े में पड़े हुए कभी मुक्त कंठ से नहीं गाते। गाना ही जीवन है, उड़ना ही जीवन है।.....आप रूप हैं, आप सुगन्ध हैं, आप पकड़कर रखने वाली वस्तु नहीं.....पहले कुमारी देव की सहचरी थी, आज कुमारी गुरुदेव की शिष्या है.....वह कुमारी बावली थी, रोगिणी थी जो विरह की छाया से भी डरती थी, जो अपने प्रियतम को कस कर थामें रखना चाहती थी कि कहीं वह भाग न जाए। जो मेरे हृदय में बस चुका है, उसे मुझसे कौन छीन सकता है। वह मेरी वास्तविक प्राप्ति है.....मैंने जो ले लिया है, जो ले सकती थी, उसे कोई रोक नहीं सकता, आप भी नहीं रोक सकते, विवाह के बन्धन उसके लिए नहीं''**30**

राजकुमारी भी सच्ची प्रेमिका की तरह अपने प्रियतम की खुशी में ही अपनी खुशी और उसकी चाहत में ही अपनी चाहत देखती है। राजकुमारी में त्याग एवं उत्सर्ग की भावना प्रबल है। वह आत्म–परिष्कार में संलग्न हो जाती है।

'दूसरी सीता' की सीता बुद्धिवादी है। उसमें अन्तर्मुखी चिन्तन की प्रवृत्ति है। उसमें विचारों की प्रधानता है। उसके विचार आत्मनिष्ठ हैं। वह अपने दायित्वों के प्रति सजग तथा ईमानदार है। वह पत्नीत्व के सनातन कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान है। वह कुलीन, करुणा, त्याग, प्रेम और सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है। वह नाथ की परिणीता है। उसका दाम्पत्य–जीवन सुखमय है। सीता भावनात्मक रूप से अपने पति की पूजा–अर्चना करती है। आदर से उसका मस्तक एवं नेत्र पति के चरणों में

ही झुके रहते हैं। सीता के लिए उसका पति देवता है। बुद्धिवादी सीता के निर्णयों में दूरदर्शिता है। इसलिए वह सास–ससुर और पति की चहेती है। एक दिन खेतों में जाते सीता को शेर सिंह अपहृत कर लेता है। सीता शेर सिंह के चंगुल से किसी प्रकार छूटकर हरिद्वार जाती है। वह हरिद्वार में नित्य सीढ़ियों पर बैठकर प्रतीक्षा करती है कि शायद उसके गाँव का कोई व्यक्ति उसे मिल जाए। एक दिन सीता को उसकी सास हरिद्वार की सीढ़ियों पर मिल जाती है। वह पति के विषय में पूछती है ''बेबे मैनू नाल ले चलेंगी, मेरा तेरे पुत नू देखण नू बलाई चित कर दाऐ?. ...चंगा, बेबे आपणे पुत नू आखीं मेरा बोलया चालिया माफ कर देवे।''[31] सीता गंगा की गोद में शरण लेती है। उसमें आध्यात्मिकता कूट–कूट कर भरी है।

5-5 देश- प्रेम एवं मानव-प्रेम :

''देश–प्रेम एक जटिल प्रवृत्ति है और इसमें स्वदेश के प्रति प्रेम की भावना को केन्द्रित करके उसके चारों ओर अनेक प्रवृत्तियों का आवेष्टन रहता है। प्रायः इन्हीं विविध प्रवृत्तियों के माध्यम से देश–प्रेम की अभिव्यंजना होती है, यद्यपि कभी–कभी इसकी सीधी एवं मौलिक रूप में अभिव्यंजना भी सम्भव है।''[32] बाबू गुलाबराय भी देश–प्रेम भाव की उत्कटता एवं इससे सम्बन्धित साहित्य की उत्कृष्टता के आधार पर इसे रस की कोटि में स्वीकार करने का समर्थन करते हैं। ''हमारी जाति के उच्च आदर्श, हमारे कोमल भाव, हमारे देश के शोभामय स्थल, हमारी प्रेममयी सभ्यता यह सब चिरकाल तक हमारी प्रशंसा तथा कवि के कीर्तन का विषय बनी रहेगी।''[33] देश–प्रेम की भांति ही मानव–प्रेम भी एक जटिल प्रवृत्ति है। मानव–प्रेम में करुणा, त्याग, सहानुभूति, न्याय, साहस, सर्वमंगल, कल्याण की भावना निहित होती है।

हिन्दी–पंजाबी–उपन्यासों में इन दोनों भावनाओं का प्रभावशाली चित्रण हुआ है। 'सीढ़ियाँ' उपन्यास की नायिका डॉ0 इन्द्रजीत (मनीषी) में देश–प्रेम की भावना ओत–प्रोत है। वह वैधव्य–ग्रन्थि को उदात्तीकृत करती है। इसके लिए वह सुपर्णा के पुत्र सुकेत को पोषित एवं शिक्षित कर उसका विवाह करती है। डॉ0 इन्द्रजीत (मनीषी) समक्ष यद्यपि कई पुरुष विवाह–प्रस्ताव रखते हैं, तथापि वह पुनर्विवाह न कर, समाज–सेवा कर, स्वदेश–प्रेम की अभिव्यक्ति करती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के उत्थान और सेवा से देश की प्रगति और उन्नति सम्भव है। इसलिए डॉ0 इन्द्रजीत समाज की निस्वार्थ सेवा कर देश–प्रेम के जजबे की पूर्ति करना चाहती है।

'नावें' की मालती देश की विसंगतियों और कुप्रथाओं पर गहरा आघात लगाती है। वह विवाहित सोमनाथ द्वारा अस्मिता–भंग होने पर अपनी पुत्री नीलिमा को जन्म देती है। वह एक अवैध–संतान का गर्भपात कराने से इंकार कर, उसे जन्म देती है। ऐसा साहस कर वह देश में होने वाली भ्रूण–हत्या के विरुद्ध बिगुल–फूँकती है। वह अकेले ही समाज के ठेकेदारों से लोहा लेती है। इसके साथ ही समाज को शिक्षित करने का बीड़ा उठाती है। वह शिक्षिका बन अध्यापन कार्य करती है एवं अपनी आजीविका की भी पूर्ति करती है। यद्यपि नावें की मालती ऐसा करने में अपनी लिबिडो–ग्रन्थि को कुंठित कर लेती है। वह अपनी प्राचार्या के आदेश से विजयेश से विवाह भी करती है और देश में एक अनोखी अलख जगाती है।

आदर्श मानव–प्रेम एक ऐसा अत्यन्त सशक्त गुंफित अनादि एवं चराचर व्यापीभाव है। जो व्यक्ति के भीतर सराहना और आनन्द का कारण होता है। अनन्यता अनुकूल–वेदनीयता, परार्थपरता और त्याग की भावना से युक्त होता है। उसकी सुख–समद्धि की इच्छा करता है और हर तरह के खतरे झेलकर भी उसमें सहायक होता है। तृप्ति की इच्छा और आवश्यकता से उत्पन्न यह एक ऐसा समर्पणमय राग है, जो अहम् और काम से आरम्भ होकर निरंहकारिता और निष्काम समर्पण की पराकाष्ठा पर पहुँचता है। बर्टेंड रसेल ''प्रेम को ऐहिक जगत से पार लौकिक जगत तक व्याप्त भावना मानते हैं।''**34**

'कृष्णकली' की पन्ना एक आदर्श–प्रेमिका है। विवाहित विद्युतरंजन मजूमदार से उसका साहचर्य होता है। ''प्रथम यौवन के गरजते–तरजते समुद्र में जब दोनों समय की पतवार दूर पटक, मस्ती से डगमगाती तरणी में तैरते, आधा फासला पार कर चुके थे। तब मझधार में ही तूफान का आभास पाकर कुशल तैराक कर्णधार–कूदकर तैरता किनारे से लग गया था। रह गई थी केवल डूबती तरणी और भय से कांपती निराधार सहचरी.....सदा फूंक–फूंककर पैर रखने वाली पन्ना जो उद्दाम यौवन के प्रथम ज्वार भाटे में वयस की सामान्य तरंगों में बह गयी..... आज उसी का प्रेमी स्वयं अपने हाथों से उसके उजले, धुले चेहरे पर कलुष की कालिमा पोत गया।''**35** विशुद्ध प्रणय प्रतिदान नहीं चाहता है। पन्ना का प्रेम भी पवित्र है। वह अपने प्रियतम की निष्ठुरता को विस्मृत कर कहती है ''.....न मुझे अब तुम पर क्रोध है, न प्रतिशोध की ही कोई भावना.....निश्चय मैं कर चुकी हूँ।.....तुम्हारी

पत्नी है, युवा पुत्र है, उनसे मैं तुम्हें छीन लूँगी, तो कभी तुम स्वयं ही मुझे क्षमा नहीं कर सकोगे। मैं जा रही हूँ रंजन।''[36] वह बहुत दूर चली जाती है ताकि उसके प्रियतम की गृहस्थी में कलह न हो। पन्ना का यह मानव–प्रेम त्याग और उत्सर्ग से परिपूर्ण है।

'कैंजा' की नंदी पर सुरेशभट्ट आसक्त था। वह नंदी को देखकर कहता ''नाश हो इस स्वर्ग की अप्सरा का, जिसने मुझ जैसे.....'' विश्वामित्र की तपस्या भंग की। नंदी के अचेतन में भी सुरेश के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा था। वह भी सुरेश के प्रेम को स्वीकार कर चुकी थी किन्तु उसका सचेतन अभी तक मौन था। नंदी ने सुरेश से परिणय करने का दृढ़ संकल्प लिया। वह भयभीत हो उठी ''क्या पता, नित्य उसके सम्मुख घुटने टेककर प्रणय की भीख माँगने वाला भिक्षुक आज स्वयं उसे भीख देने से मुकर जाए! पहले उसे आज ही लज्जा–संकोच को ताक पर धर मध्य रात्रि के एकान्त में स्वयं अभिसारिका बन उसके हृदय की थाह लेनी होगी. .....वह कटे पेड़–सी उस कंकाल पर औंधी गिर पड़ी और तेजी से उठ गिर रही। उस छाती पर सिर धर, फूट–फूटकर रोने लगी। वर्षों से रोका गया प्रेम का उच्छवास नदी के टूटे बाँध की ही भाँति, कगार पर खड़े विवेक–वट वृक्षों को तोड़ता–फोड़ता अपने साथ वहां ले गया....मैं तुम्हें लेने आई हूँ सुरेश।.....अनाड़ी हाथों से, जीवन में पहली बार किसी पुरुष की दाढ़ी बनाई, फिर बटुए से अपनी कंघी निकाल, उसकी उलझी जटाओं को सुलझाने लगी।''[37] नंदी सुरेश भट्ट से परिणय करती है ''.....श्रृंगारिका नववधू जब झूमके पहनकर प्रणयी के सिरहाने खड़ी हुई, तो वह अचेत पड़ा था.....सुरेश भट्ट, तुमने मेरी एक बात नहीं सुनी। मैंने ही तुम्हारा सर्वनाश किया है। ठीक कहते थे तुम, बड़ी देर कर दी मैंने, बड़ी देर। पर

जाने से पहले सुन जाओ सुरेश, मैंने जीवन में तुम्हीं से प्यार किया था, सुनते हो ?''[38] नंदी का प्रेम अनाथ सुरेश भट्ट के प्रति सच्चा और निस्वार्थ मानव–प्रेम है।

'कृष्णकली' की कुन्ती सुसम्पन्न, सौंदर्यमयी, सर्वगुण सम्पन्न है। कुन्ती पर मुग्ध हो माया कहती है, ''मैं देखूँ, कुन्ती में क्या नापसन्द करते हैं। ओढ़ने वाले ओढ़ले बिछाने वाले बिछा ले ऐसी लड़की है कुन्ती।''[39] कुन्ती अपने सद्व्यवहार से ससुराल में सबकी आँखों का तारा बनती है। ''कुछ ही दिनों में वह उस अपरिचित व्यक्ति के पीछे–पीछे किस अदृश्य जादुई डोर से बंधी घूमने लगी थी।''[40] आचार्य शुक्ल जी ने भी कहा है, ''अपने परिजनों, अपने सम्बन्धियों, अपने पड़ोसियों देशवासियों क्या मनुष्य मात्र और प्राणि–मात्र तक से प्रेम करने भर की जगह उसके हृदय में बढ़ गई है।''[41] 'कृष्णकली' की कुन्ती भी इसी प्रेम–सेवा–भाव से सबको मुग्ध कर लेती है।

'जिन्दगीनामा' की लखमी ब्राह्मण कन्या है। वह सैय्यद से प्रेम करती है। उसके प्रणय में धर्म एक दीवार है। उसे प्रियतम से विरह सहना पड़ता है। वह प्रेम–विरह में 'जल बिन मछली' की तरह तड़पती है ''.....उसके बिना मैं मर जाऊँगी.....ऊपर वाले को हाजिर–नाजिर जान के कहती हूँ, वही मेरे तन–मन का साथी है।''[42] लखमी देश में फैले जाति–बन्धनों की सीमाएं तोड़ जातिवाद को नष्ट कर, मानव–प्रेम की अखण्ड दिव्य ज्योति प्रज्जवलित करना चाहती है।

'कोरजा' की मोना अनन्य, एक निष्ठ प्रेमिका है। उसके प्रियतम की अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। वह नसीमा से कहती है ''.....मैंने भी लड़कियों की तरह सपनों की खेती की थी पर समय से पहले ही उसे काट लिया गया। जानती

हो, जिससे मेरी शादी होने वाली थी, वह एक मामूली से एक्सीडेन्ट में मौत की राह चला गया। .....आज मेरा माली उसी जगह खड़ा है, जहाँ से मैं चली थी। जहाँ से मैंने उसे छोड़ा था। .....इकट्ठे इतना प्यार, इतना स्नेह हो सकता है।''**43**

'किशनुली' की काखी सर्वगुण सम्पन्न नारी है। वह दयावान मितभाषी, हंसमुख है। उन्मादिनी किसना को कोई पत्थर मारता है, कोई उसे पगली कहता है। काखी को किसना पर दया आती है वह कहती है ''.....खबरदार जो अब इसे पगली कहा आज से इसका नाम किसना .....''**44** किसना क्षयरोग ग्रस्त हो जाती है। काखी उसका उपचार करवाती है। वह किसना के उपचार हेतु अपने गहने गिरवी रखती है। किसना की मृत्यु–पश्चात वह उसका दाह–संस्कार और क्रिया–कर्म करवाती है। ''.....गया जाकर मैंने करन के हाथों उसकी किरिया करवाई और उसे अपना स्वर्ण सतलड़ बारह तोले का भेंट दे दिया।''**45** काखी विक्षिप्त किसना के लिए अपने जेवर तक बेच देती है। वह किसना के पुत्र करन का भरण–पोषण कर उसे सुशिक्षित करती है। काखी का मानव–प्रेम देखकर हमें बाबू गुलाबराय की पंक्तियाँ स्मरण हो आती हैं ''हमारी जाति के उच्च आदर्श, हमारे कोमल भाव, हमारे देश के शोभामय स्थल, हमारी, प्रेममयी सभ्यता, यह सब चिरकाल तक हमारी प्रशंसा तथा कवि के कीर्त्तन का विषय बनी रहेगी।''**46**

'रतिविलाप' की अनुसूया अतिशय उदार है। उसे पति की अकाल–मृत्यु पश्चात् वैधव्य–दंश झेलना पड़ता है। वह जीविकोपार्जन हेतु साड़ियों का व्यापार करती है। अनुसूया में मानव–प्रेम कूट–कूट कर भरा है। वह पतिहन्ता हीरा को

निराश्रय देख अपने गृह–शरण देती है। हीरा अपनी शरणदात्री को भी नहीं छोड़ती। वह अनुसूया के श्वसुर को प्रेम–प्रसंग में फांस, उस की हत्या कर देती है। अनुसूया की एक दिन अकस्मात हीरा से भेंट होती है किन्तु अतिशय उदार ह्रदय अनुसूया कहती है उसे पकड़वाती कैसे ''क्षण भर पहले मेरा नन्हा देवर मुझसे अपनी उन परिचित आँखों के भिक्षा–पात्र में दया की भीख जो मांग गया था।''[47] अनुसूया का त्याग और उदारता उसके मानव–प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं।

पंजाबी उपन्यास लेखिकाओं ने भी अपने उपन्यासों में देश–प्रेम और मानव–प्रेम की अभिव्यक्ति की है। 'डाक्टर देव' की ममता का देव से अनन्य प्रेम है। प्रेम में भय का कोई स्थान नहीं होता। प्रेम एक सुदृढ़भाव है जो प्रत्येक ध्वंस को मिटा कर अमरत्व को प्राप्त होता है। ममता ने भी देव से विशुद्ध, एक निष्ठ और सच्चा प्रेम किया है। इसलिए ममता के प्रेम में कहीं भी दुराव, छिपाव अथवा अनास्था का कोई स्थान नहीं है। ममता मानो देव की ही आत्मा का प्रतिबिम्ब है। वे दोनों एक दूसरे के मन, प्राण और आत्मा में बसे हुए हैं। उनके सम्बन्धों में लिबिडो (काम) का आवेश नहीं वरन निश्छल प्रेम है। ममता की एक मात्र यही आकांक्षा है कि वह जीवन पर्यन्त देव की ही दासी बने। जब ममता का परिणय जगदीश से हो जाता है, तब वह अत्यन्त विकल और विचलित हो जाती है। देव के प्रति उसका प्रेम प्रबल है। इसलिए वह जगदीश से सत्योद्घाटित करती है, ''हम दोनों एक समान दउया के पात्र हैं। किसी ने मेरे जीवन को नष्ट किया, मैंने तुम्हारे जीवन को नष्ट कर दिया। वास्तव में क्या मैं क्या आप, क्या कोई और सब साधन–मात्र है। हम कर्म करते अवश्य हैं, पर कर्त्ता नहीं हैं। तोड़ने–फोड़ने के लिए साधन

उत्तरदायी नहीं, वरनत् साधनों का प्रयोग करने वाले हाथ–हमारे भाग्य उत्तरदायी है।''[48] पच्चीस वर्षों के बाद जब ममता का पुत्र मन्नू अपने पिता देवराज से ममता का परिचय करवाता है। तब वह चिन्तन करती है कि वह तो डाक्टर देव को इस जन्म तो क्या अगले जन्म में भी पहचान सकती है। प्रेम का सम्बन्ध युगों–युगान्तरों तक अमर है। ममता का भी प्रेम चिरकालिक और अमर है। उसके पवित्र प्रेम में ''न यौवन है, न बुढ़ारपा है,ख न शरीर है.....'' ममता डा0 देव को देखकर बस इतना ही कह पाती है, ''पहले, सब कुछ होते हुए भी मैं जीवन में आपको कुछ न दे सकी, अब तो मेरे हाथ ही खाली हैं।''[49]

'कोई नहीं जाणदा' की वेणु अपने सर्वान्तःकरण से चन्दन सिंह को प्रेम करती है। नर और नारी के हृदय में एक स्वाभाविक आकर्षण होता है। यही आकर्षण प्रेम का प्रथम सोपान है। व्यवहारवादियों के अनुसार प्रेम एक प्रकार का निरन्तर अभ्यास है। इस अभ्यास का एक ऐतिहासिक क्रम होता है जो शनैः–शनैः अग्रसर होता है। वेणु का जब चन्दन सिंह से प्रथम–मिलन होता है। तब वह उसे कम्पित करता है, ''परछाई जब दो हो गई वेणु के लिए तालाब के पानी में स्वप्न तैरने लगे हैं.....एक क्षण उसने आँखे बंद कर लीं।''[50] वेणु के पिता उसका परिणय अलीगढ़ के एक व्यापारी से कर देते हैं। तब वह विकल और व्यथित हो जाती है। वह अन्तर्मुखी होकर आत्म–जगत में लीन हो जाती है। वह दिवास्वप्नों में खोई रहती है। नदी उसे स्वप्न में कहती है, ''तुम मेरी तरह कुंवारी हो सदा कुंवारी, जैसे मैं किसी के छूने से भी कुंवारी रहती हूँ–तुम भी उसी तरह पवित्र रहोगी।''[51]

'जेबकतरे' की शीरीन पारसी युवती है। वह कपिल के प्रेम में अनुरंजित है। शीरीन का विवाह उसकी इच्छा–विपरीत कर दिया जाता है, लेकिन शीरीन ने तो कपिल से तन–मन से प्रेम किया है। शीरीन के अनन्य और एकान्त प्रेम की प्रतिष्ठा उसके प्रणय में मिलती है। ''नारी के इस अनन्य प्रेम की पवित्रता और अलौकिकता को हिन्दी उपन्यासकार भी सहज ही श्रद्धा अर्पित करता है। वह मानता है कि नारी अपने जीवन में केवल एक ही पुरुष को प्रेम कर सकती है, एक ही के चरणों में श्रद्धा अर्पित कर सकती है। यदि ऐसी नारी का विवाह उसके प्रेमी के स्थान पर किसी अन्य पुरुष के साथ किया जाता है तो वह उसके साथ घोर अन्याय है और ऐसा विवाह व्यभिचार की श्रेणी में आ जाता है।''[52] वह कपिल से पत्र–व्यवहार करती है, ''कपिल सुबह स्कूल में क्लास ले रही थी कि एक हादसा हो गया। बाहर नहीं मेरे अन्दर। कपिल! कोई जिन्दा पावों से मरे हुए रास्ते पर कैसे चले? और मैंने मरे हुये रास्तों से घबराकर नहीं अपने जिन्दा पावों से घबरा कर, स्कूल से छुट्टी ले ली। और घर आ गई.....।'' विवाहोपरान्त शीरीन कपिल की स्मृति के सहारे अपनी ससुराल में रहने की चेष्टा करती है किन्तु उसकी आत्मा निरन्तर द्वन्द्व करती रहती है। यही अन्तर्द्वन्द्व उसे स्कूल से छुट्टी लेने के लिए बाध्य करता है। वह अपने जीवन के रास्तों को मरे हुए रास्ते कहती है। वह कपिल के वियोग में निरन्तर मछली की भांति तड़पती रहती है। वह अपने पूर्वानुराग को विस्मृत करने में असमर्थ है।

'आल्हणा' की नीना अनाथ है। नीना बारह वर्षों तक राजवन्ती के अस्पताल में रहती है। वहीं तेज भी रहता है। बाल्यावस्था से ही दोनों एक दूसरे के प्रति

अनन्य प्रेम करते हैं। इस अनन्य प्रेम के कई कारण हैं। वे दोनों ही अनाथ हैं। बाल्यावस्था से ही अस्पताल में वे साथ–साथ रहते हैं। नीना को कृष्णा देवी गोद ले लेती है। नीना का तेज के प्रति प्रेम दिन प्रतिदिन प्रौढ़ होता जाता है। प्रेम का संवेग अभ्यानुकूल है। जब कोई दो प्राणी भावात्मक रूप से अथवा सामाजिक रूप से निरन्तर साथ रहते हैं, तब उनमें परस्पर आकर्षण का प्रादुर्भाव हो जाता है। प्रारम्भिक आकर्षण कालान्तर में प्रेम का रूप धारण कर लेता है। प्रेम में दो होते हुए भी मन एक ही रहता है। उनमें द्वैत की समाप्ति हो जाती है। नीना ने तेज का एक रूप बना लिया। वह उसी के साथ हंसती, खेलती। यह तेज सदैव उसके साथ रहता, ''आरोपण एक ऐसी मानसिक रचना है, जिसमें कोई असहाय प्रेरणा या इच्छा, जो व्यक्ति के मन में सक्रिय होती है, दूसरे व्यक्ति या विषय पर आरोपित की जाती है। अपने आन्तरिक दोषो, हीनताओं और इच्छाओं को दूसरों में देखा जाता है।''[53] वह स्वनिर्मित तेज में वास्तविक तेज को आरोपित कर अपनी दमित–इच्छाओं की पूर्ति करने का प्रयास करती है। नीना को जब ज्ञात होता है कि वीणा उसके तेज को चाहती है। वह तेज की प्रगति और वीणा के एकाकी प्रेम समक्ष उत्सर्ग करती है। तेज और वीणा को दाम्पत्य–जीवन में बांधने के लिए नीना ने जगन से विवाह कर लिया। नीना का तेज के प्रति विशुद्ध प्रेम है। वह लेना नहीं बल्कि देना जानती है। इसलिए वह तेज और वीणा के रास्ते से सदैव के लिए हट जाती है। वह लम्पट–प्रवृत्ति के जगन से विवाह कर आजीवन कष्ट झेलती है।

'ॲक दा बूटा' की उर्मी का बाल्यावस्था से ही गौतम के प्रति आकर्षण निःस्वार्थ और सात्विक है। वह गौतम की प्रीत में कभी–कभी यूँ गुनगुनाती है–

''प्रीत ते मेरी सोने दा गड़वा,

प्रीत ते मेरी गंगा जल पानी।''[54]

जब उर्मी का परिणय उसकी इच्छा के विपरीत कर दिया जाता है। तब उर्मी को मन ही मन असह्य वेदना होती है। वह अपना सारा त्रास मौन रहकर सहती है। पति के विदेश में धनोपार्जन के जाने के पश्चात, उर्मी अपने ससुराल वालों को बड़े प्रयास और खुशामद से मनाकर शहर में शिक्षा–पाने के लिए जाती है। वह अपने भाई के सहयोग से प्रियतम से भेंट करती है। उर्मी का प्रेम अटल अनुराग और अनुपम त्याग का सम्मिश्रण है। उर्मी गौतम को अपने अन्तरतम से स्नेह करती है। इसलिए मृत्योपरान्त भी उर्मी की होंद गौतम के रोम–रोम में समा जाती है।

'एह सच है' की उर्सिला अपने हृदय का संचित स्नेह इकबाल को अर्पित करती है। उसके प्रेम में निःस्वार्थ आत्म–समर्पण है। उर्सिला यह जानती है कि इकबाल एक जमींदार का पुत्र है। वह उससे कभी भी विवाह नहीं करेगा किन्तु सच्चा–प्रेम तो प्रतिदान नहीं चाहता। उर्सिला का प्रेम इतना अनन्य और अक्षय है कि अपने प्रेम का प्रतिदान न मिलने पर भी उसकी निष्ठा में कोई अन्तर नहीं आता। वह अन्त तक इकबाल के सुख और हित के लिए त्याग करती है।

'चक्क नम्बर छत्ती' की अलका निर्भीक, साहसी शिक्षित एवं धैर्यवती युवती है। वह कुमार के स्टूडियो में काम सीखती है। कुमार का व्यक्तित्व चंचल–प्रवृत्ति का है। वह कई नारियों से साहचर्य स्थापित करता है। अलका का कुमार के व्यक्तित्व–निर्माण में महत्वपूर्ण सहयोग है। अलका कुमार के प्रति आकर्षित है। वह कुमार से कहती है, कि वह अन्य औरतों के जीवन से न खेलें। उसे जब भी

वासना–पूर्ति करनी हो, वह उसे बीस रूपये देकर अपनी तुष्टि कर लिया करे। कुमार इससे सहमत हो जाता है। कुमार अहम्वादी पुरुष है। वह अलका को कैप्टन जगदीश चन्द्र से परिणय करने का आदेश देता है। अलका भी प्रियतम कुमार की आज्ञा स्वीकार कर, कैप्टन से परिणय कर लेती है। कुमार को अलका का विरह असहनीय है। वह रूग्णावस्था में पहुँचता है। अलका कुमार की सेवा–सुश्रूषा से उसके आहत अहम् को सहलाने का प्रयास करती है। कुमार के चरित्र में अलका के त्याग, संयम और क्षमा के योग से अलौकिक स्निग्धता आ जाती है।

'उनचास दिन' की शीरी का लेखक संजय के प्रति आकर्षण अत्यन्त निःस्वार्थ और सात्विक है। शीरी का अन्तस उसे पति रूप में वरण कर चुका है, ''उसने अड़ोल सी अपनी एक उंगली अपने माथे से छुआई, तो सामने शीशे में एक लाल बिन्दी उसके माथे पर दिखने लगी, और शीरी का अपना चेहरा बहुत नया होकर शीशे में खड़ा हो गया।''**55** शीरी यह जानती है कि उसका प्रियतम संजय मीता को प्रेम करता था। मीता की अकस्मात मृत्यु संजय को अवसाद–अवस्था में पहुँचाती है। संजय को सामान्यावस्था में लाने के लिए शीरी अत्यधिक परिश्रम करती है। शीरी की सेवा–भावना, संयम–वृत्ति और बुद्धि धीरे–धीरे संजय में प्रेम का रूप धारण करने में सहायक होती है। शीरी संजय के लिए कम्पोंजिग सीखती है, हिन्दी सीखती है, उपन्यास का अनुवाद करती है और ताज–प्रेस भी लगाती है, ये सारी क्रियाएं संजय को भी प्रणय से अनुरंजित करती हैं, ''संजय ने उठकर शीरी के पास आकर धीरे से उसे अपने पहलू से लगा लिया....उसने झुक कर शीरी के होंठ चूम लिए। होले से कहा, ''मैं जानता था, तुम ही माजी के प्याले में मुस्तकबल का पानी पिलाओगी।''**56**

'धरती सागर ते सीपियां' की चेतना इकबाल से प्रणय करती है। वह अपने हृदय का संचित स्नेह इकबाल को अर्पित करती है, ''चेतना इक कोइले वांग तिड़क उठी, पता नहीं कदो इक चिणग उड के इकबाल दी छाती विच पे गई, कुझ धुखिआ, कुझ सुलगिआ, कुझ बलिआ ते इकबाल ने चेतना नूं घुट के अपणे गल नाल आ लिआ।''[57] चेतना अपने भाग्य को स्वयं बनाती है। यह विधि का विधान नहीं है। वह सोचती है कि उसने अपनी तकदीर स्वयं चुनी है। उसने अपने सामने एक नहीं दो नहीं वरन सम्पूर्ण जीवन ही रख दिया है। चेतना एक साहसी और त्यागमयी नारी है। उसके प्रणय में निःस्वार्थ समर्पण है।

'अगनी परिख्आ' की मनदीप की हरदेव से सगाई होती है। मनदीप के चरित्र में प्रेम की तन्मयता और समर्पण की अधिकता है। ''नारी पुरुष का आकर्षण एक ऐसा मनोवैज्ञानिक सत्य है, जिसे कभी भी अस्वीकारा नहीं जा सकता। यह आकर्षण उतना ही चिरंतन है, जितना सृष्टि का आरम्भ। इसी कारण साहित्य में भी नारी के प्रति–पुरुष की आकर्षण–भावना सदैव किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति पाती रही है। इस आकर्षण के मूल में कभी उसका रूप रहा तो कभी पुरुष की मानसिक भूख।''[58] मनदीप और हरदेव की सगाई टूट जाती है। मनदीप कुकनूस पक्षी की तरह विराहाग्नि में जलने लगती है। वह हरदेव के प्रणय को विस्मृत करने में असमर्थ है। इस सदमें से मनदीप के पिता का देहावसान हो जाता है। मनदीप को जगपाल की परिणीता बनना पड़ता है। मनदीप लौकिक बंधनों और वर्जनाओं को अपने उत्कट प्रेम–प्रवाह में बहाती हुई हरदेव के लिए अपने जीवन को प्रेम–यज्ञ की

आहुति बना डालती है। हरदेव की अप्राप्ति से मनदीप का मन वितृष्णा से भर गया, हताशा से वह तनावग्रस्त हो गई। उसे न खाने की सुध रही और न पहनने की। उसकी मनःस्थिति शनैः–शनैः विक्षिप्त सी होती गई। लेखिका ने मनदीप के प्रेम की तन्मयता और निष्काम समर्पण का अपूर्व दृष्टांत प्रस्तुत किया है।

5-6 स्व प्रतिष्ठापन अथवा अहम् प्रवृत्ति :

'रथ्या' की बसन्ती विमलानन्द के प्रति आकर्षित है। विमलानन्द का प्रथम–प्रणय उसके मन–मस्तिष्क को मदहोश बना देता है। दोनों की कुंडलियाँ मिलाई जाती हैं। कुंडली न मिलने के कारण दोनों को दाम्पत्य–जीवन से वंचित रहना पड़ता है। बसन्ती का हृदय भारतीय रूढ़ियों और परम्पराओं के प्रति आक्रोशित हो उठता है। वह घर से पलायन करती है। वह सर्कस और नृत्य का आश्रय लेती है। वैभव और विलास उसके चरणों पर लौटते हैं। यौवन और मदिरा के रागों के बीच उसकी दिनचर्या व्यतीत होती है, लेकिन उसे वास्तविक शान्ति कहीं नहीं मिलती। उसका मन अतृप्त और अशान्त ही रहता है। नारी का सहज धर्म एकान्त और अनन्य प्रेम है। उससे वह वंचित है। बसन्ती के हृदय में स्वप्रतिष्ठापन की प्रवृत्ति है। इसलिए वह अधोगति का मार्ग अपनाती है।

'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती बाल्यावस्था में ही बलात्कार की शिकार होती है। उसके प्रियतम असद का भी देहावसान हो जाता है। उसको दोहरे आघात का दंश झेलना पड़ता है। जब भी समाज के ठेकेदारों ने उसे छेड़ा, उसके स्त्रीत्व को चुनौती दी, उसने चंडी बनकर उनका सामना किया। वह पुरुषों से लोहा लेती और नारी जाति के मुँह पर थूकती है। उसके हृदय में घृणा रूपी अपमान की ज्वाला

भड़कती है। आँखों से चिनगारियां निकालकर, प्रतिशोध की भावना से, वह चंडी का रूप धारण करती है। उसके जीवन में रंजन, भानुराव, सुब्रामनियम, रोहित आदि विवाह–प्रस्ताव रखते हैं किन्तु वह अस्वीकार कर देती है। रत्ती के विशुद्ध प्रेम को खंडित करके उसकी लिबिडो–प्रवृत्ति पर आघात होता है। वह अपने इस अपमान को सहन नहीं कर सकी। यह आघात उसकी वेदना और दुःख को बढ़ाता है। एक तरफ असद का प्रणय उसे व्याकुल करता है तो दूसरी तरफ बाल्यावस्था का अमानुषी–व्यवहार उसे पीड़ित करने लगता है। ऐसी घृणाग्नि में जलने वाली अहम्मन्या रत्ती के जीवन में दिवाकर का प्रवेश होता है। वह उसकी लिबिडों–ग्रन्थि को संतुष्ट कर उसके व्यक्तित्व को सजीव और विकासशील बनाता है।

'उसके हिस्से की धूप' की मनीषा जितेन की पत्नी है। वह रागात्मक प्रवृत्ति की अधिकता से आक्रान्त है। रागमूलक–प्रवृत्ति की तृप्ति के लिए वह अविवाहित मधुकर नागपाल से प्रणय–लीला रचाती है। वह अपने पति से सम्बन्ध–विच्छेद कर मधुकर की परिणीता बनती है। ''जब मधुकर का मुख दुबारा उसके मुख पर झुका तो सहसा, कोड़े के वार के समान उसे याद आ गया कि यह प्रथम चुम्बन नहीं है। इससे पहले जितेन के अनेकानेक तीखे चुम्बनों को वह सह चुकी है।''[59] वह मन ही मन इस घृणित–भाव के कारण मधुकर की भी उपेक्षा करने लगी। मनीषा के अन्तस की हीनता–ग्रन्थि उसे पीड़ित करती है। उसके अहम् को टीस का दंश झेलना पड़ता है।

'मैं और मैं' की माधवी निर्धन लेखक कौशल कुमार को अचेतन रूप में प्रेम करती है। इस प्रणय के कारण वह कौशल को आर्थिक सहायता देकर उसके

लेखन–कार्य में सहयोग भी करती है, लेकिन माधवी को जैसे ही कौशल की लम्पटता का आभास होता है। वह कहती है, ''यह आदमी तो पागल है.....पागल नहीं एकदम होशियार है। सजग, खुदगर्ज, आत्मग्रस्त, सेडिस्म की हद तक आत्मलीन।''[60] माधवी का मन कौशल कुमार के प्रति घृणित–भाव से ग्रसित है। वह अहम् प्रवृत्ति की अधिकता के कारण उसकी हत्या भी करना चाहती है। मनीषा अन्त में घृणित–भंवर से उन्मुक्त हो स्व–प्रतिष्ठापन कर मानसिक शान्ति पाती है।

'पतझड़ की आवाजें' की उषा रागात्मक–ग्रन्थि के त्रास से पीड़ित है। नारी–स्वभाव की मनोवैज्ञानिक विशेषता है कि प्रणय–प्रसंग में वह विश्वासघात और अन्याय सहन नहीं कर सकती। उषा पुरुष–वर्ग के प्रति प्रतिशोध और घृणा भाव से उद्वेलित है। वह भी पुरुष–वर्ग के साथ विश्वासघात करने में आत्मिक–तुष्टि पाती है। वह अपनी सखी अनुभा से कहती है, ''अनुभा, तुम भी सुन लो, इस मर्दजाति के साथ तभी सोओ अगर माल हासिल होता हो या पोजीशन हासिल होती हो।''[61] वह पर पुरुष के आलिंगन में आबद्ध होने के लिए धन को प्राथमिकता देती है। उषा स्व–प्रतिष्ठापन के लिए पुरुष रूपी बिस्तर को बदलने में तनिक भी संकोच नहीं करती है। वह अतृप्त–कामेच्छा के कारण हीनता–ग्रन्थि से पीड़ित नारी है।

'जयश्री' की नायिका जयश्री का मंगेतर सुरेशर है। सुरेशर के पिता धन–लोलुप हैं। जयश्री सुरेशर को भी धन–लोलुप समझती है। जयश्री दहेज–प्रथा की विरोधी है। जयश्री अहम्–प्रवृत्ति की नारी है। उसका स्वाभिमानी हृदय कभी धन से खरीदा पति नहीं स्वीकारता क्योंकि धन से क्रय किया पति कभी प्रेम नहीं कर

सकता। वह दहेज–प्रथा और कन्या की विवशता पर क्षोभ प्रकट करती है ''यह सब घर आपको गोशाला नहीं प्रतीत होते? गायें–बंधी हुयी हैं, खूँटों से, यह अलग बात है कि कितनों के गले में रेशमी रस्सी है और कौड़ी के पिरोये हार भी.....। मैं रुपये के मूल्य से बिका हुआ पति नहीं चाहती.....इस रिश्ते के लिए मेरे दिल में एक नफरत बन चुकी है।''[62] जय श्री स्व–प्रतिष्ठापन हेतु अपने मंगेतर को ठुकरा देती है।

'दिल्ली दीआं गलिया' की कामिनी का प्रणय सुनील के प्रति है। वह सुनील के प्रति आकर्षित होती है। वह उससे उपेक्षित हो नासिर का सानिध्य पाती है। कामिनी के सौंदर्य रस का पान करने के लिए कई पुरुष–भ्रमर मंडराते हैं। जगीर सिंह भी कामिनी का सौंदर्य–उपासक है। कई सौन्दर्यापासकों के होने पर भी कामिनी स्व–प्रतिष्ठापन हेतु किसी को महत्व नहीं देती है।

'इक सवाल' की रामिन्दर एक मॉडल है। सुप्रसिद्ध कलाकार जगदीप उसके कई पोज बनाकर उसको विभिन्न आकृतियों में अलंकृत करता है। शनैः–शनैः जगदीप के सानिध्य से उसके अन्तस में प्रणयांकुर प्रस्फुटित होता है। ''प्रणय एक ऐसा तत्व है जिसकी सफलता में लेशमात्र संदेह होने से मनुष्य के मानसिक संतुलन में बाधा उत्पन्न हो जाती है। जो उसे कभी–कभी गहन–पतन के गर्त में ला ढकेलती है।''[63] नूरा जो कि जगदीप की प्रेयसी है रामिन्दर स्व–प्रतिष्ठापन हेतु उसकी तस्वीर 350/– में खरीद कर फाड़ देती है।

'तेरहवा सूरज' की मीता अनमेल–विवाह के कारण वितृष्णा की शिकार है। वह अपने पति मिस्टर पुरी से घृणा करती है। वह अपनी अहम्–प्रवृत्ति की संतुष्टि होती संजय से रागात्मकता रखती है। वह संजय से कहती है ''मेरा जीअ करता ऐ.. ..मेरा कफन किसे हॅथ दा न हावे, सिर्फ तेरे हॅथ दा संजय।'' वह मानसिक रोगी हो जाती है। जीवन से निराश मीता मृत्यु के पश्चात भी पति द्वारा ओढ़ाए गए कफन के विषय में सोचकर वितृष्णा से भर उठती है। इसीलिए वह संजय से कहती है कि वह ही उसे कफन ओढ़ाए। इस कथन से उसके आन्तरिक उद्‌गार प्रकट होते हैं जो उसके विरागात्मक भावों को प्रकट करते हैं।

'अगनी परिख्आ' की मनदीप का परिणय शराबी, मंदबुद्धि, नपुंसक, लम्पट तथा उदण्ड जगपाल से होता है। परिणामस्वरूप मनदीप में विरागात्मक ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है। जगपाल की अस्वाभाविकता से मनदीप को गहरा आघात लगता है। तब स्वाभिमान से युक्त हो जाने के खतरों से उबरने के लिए उसमें प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। मनदीप का अहम् खण्डित होने के कारण उसके व्यक्तित्व में भी विघटन आ जाता है। अयोग्य पति की उपेक्षा से उसमें विनाश–प्रवृत्ति जाग्रत होती है। उसके अचेतन में जगपाल के प्रति विकर्षण है। इसीलिए मनदीप में विनाश–वृत्ति उत्पन्न होती है। मनदीप जगपाल से भी कहती है कि वह उसे अपनी पिस्तौल से मार दे। मनदीप का दाम्पत्य–जीवन दुःखमय है इसलिए वह जगपाल से तलाक लेती है। मनदीप के स्व को जगपाल ने खंडित किया है।

'ऐहु हमारा जीवणा' की भागवन्ती नारायण की द्वितीय पत्नी है। भागवन्ती सौतिया–डाह और ईर्ष्यावश कलह के मार्ग को अपनाती है। वह स्व–प्रतिष्ठा हेतु अपनी सौत भानो से बात–बात में झगड़ा करती है। भागवन्ती का पहला पति उसके इन्हीं अवगुणों के कारण उसे त्याग देता है। भागवन्ती अपनी सौत भानो को गृह से निष्कासित कर देती है। भानो एक सरल ह्रदया नारी है। वह भागवन्ती के सभी अत्याचारों को सहती है। भागवन्ती के असद–व्यवहार का कारण उसका खण्डित अहम् है। वह अपनी सौत भानो की उपस्थित में स्वयं को असुरक्षित महसूस करती है। इसलिए वह सौतिया–डाहवश उसे गृह–निष्कासित कर देती है।

'सब देश पराया' की ज्योति को वैधव्य का दंश झेलना पड़ता है। उसे पति गौतम की मृत्यु के पश्चात सम्पूर्ण देश पराया सा प्रतीत होने लगा। वह स्वयं की शक्ल भी भूल चुकी थी। वह अपने जीवन से निराश हो चुकी थी। उसके ह्रदय की कोमल रागात्मक वृत्तियाँ दमित हो चुकी थीं। वह प्रियतम का विरह सहने में असमर्थ है। वह अपने पति के आदर्श और स्व–प्रतिष्ठा हेतु जीवन का बलिदान कर देती है।

'धरती सागर ते सीपियाँ' की मिन्नी अपने ह्रदय के संचित स्नेह को जग्गी को समर्पित करती है। जग्गी से विवाहपूर्व का साहचर्य उसे गर्भवती बनाता है। समाज की प्रताड़ना से बचने के लिए वह जग्गी की परिणीता बनती है। जग्गी से तिरष्कृत होकर उसके अहम् को आघात पहुँचता है। ''.....ओहदे जिस्म नू छोहणा मैंनू चंगा नहीं लगदा, ...मैंनू हमेश इंज जापदा ऐ जिवें मैं आपणे सुपनिआं दा गुतावा कर दी पई आं .....ते इक कबर मेरी छाती विच बणी होई ऐ.....।''**64** मिन्नी के उपर्युक्त कथन में कितनी वेदना और टीस है। वह दाम्पत्य–जीवन के दुःखों से निवृत्ति हेतु नींद की गोलियां खाकर खंडित–अहम् को तुष्ट करती है।

5-7 **आत्मरक्षा प्रवृत्ति पर आधारित भावनाएं :**

यह प्रवृत्ति व्यक्ति के अहम की रक्षा करती है। सामान्य व्यक्ति के जीवन में आत्म–रक्षात्मक प्रवृत्तियों का विशेष योगदान रहता है। यह व्यक्ति की समायोजन सम्बन्धी आवश्यकता की सरलतापूर्वक संतुष्टि करती है। यह व्यक्ति की कुंठा, तनाव, निराशा तथा असफलता को न्यून करके व्यवहार को सामान्य बनाती है। यह व्यक्तित्व–विघटन से बचने का सार्थक उपाय प्रस्तुत कर उसे चिंतामुक्त बनाती है। सेमन्ड के कथनानुसार ये चिंता से केवल रक्षा ही नहीं करती बल्कि यह उन विधियों की ओर संकेत भी करती है जिनसे चिंता उत्पन्न करने वाले आवेगों की दिशा भी बदल जाती है। अतः यह व्यक्ति के व्यवहार को तनावों से दूर करके सामान्य बनाती है। आत्मरक्षात्मक प्रवृत्ति पर आधारित बौद्धिकता, पलायन अथवा भय, क्रोध, दैन्य और दासत्व इत्यादि हैं।

5-7-1 **बौद्धिकता**

''बौद्धिकता का भारतीय मनोविज्ञान में पृथक् वर्णन नहीं मिलता। पौरुष्य एवं क्रूरता के वर्णनों में ही इसके संकेत ग्रहण किये जा सकते हैं। पौरुष एवं क्रूरता अन्य व्यक्तियों को कठोर शब्द कहने, उनके प्रति कटु रूप में सोचने एवं उनके ऊपर आक्रमण करने आदि के प्रेरक भाव हैं। इनमें प्रायः विवेक लुप्त हो जाता है।''[65] काव्यशास्त्र में बौद्धिकता अथवा वीरता का वर्णन वीर रस के स्थायी–भाव उत्साह के रूप में किया गया है।

हिन्दी–महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में बौद्धिकता की सीमित अभिव्यक्ति की है। 'अमलतास' की कामदा रजवाड़ों के सम्पन्न–वातावरण में पली

है। वह हरदेव लाल की परिणीता है। हरदेव कामदा की सदैव उपेक्षा कर उन्नत बेगम के प्रणय में आबद्ध है। हरदेव लाल न केवल कामदा को उपेक्षित करता है बल्कि उसे त्याग भी देता है। वह वीरता से इन समस्त प्रताड़नाओं का सामना कर अपनी अभिरुचि–अनुसार सामाजिक कार्यों में तल्लीन हो जाती है। वह पति की रुग्णावस्था में उसकी सेवा–सुश्रूषा भी करती है।

'भैरवी' की रुक्मणी का परिणय गजानन से हुआ। वह रुक्मणी के लिए दिन रात खटता है लेकिन रुक्मणी गजानन को अपने रोब से भीगी बिल्ली बनाए रहती है। गजानन के व्यवसाय से घर में सुख समृद्धि की लहर थी। गजानन यदि कृपणता से कुछ संचय करने की चेष्टा भी करते तो रोबदार रुक्मणी उन्हें चीर कर रख देती। वह वाक–बौद्धिकता में तो प्रवीण है। लेकिन सुगृहिणी वह कभी भी नहीं बन सकी।

'गैंडा' की राज वेद की परिणीता है। वह अपने पति को जूती बराबर समझती है। ''बदसूरत पति की पत्नी होने में जो सुख है, वह तू कभी समझ ही नहीं सकती। कोई भी फरमाइश मुँह से निकलते ही पूरी। मेरे गैंडे का चमड़ा भी निखालिस गैंडे का है.....।''[66] राज पति वेद को रोबदार शब्द–जालों में उलझाए रहती है। वह पति ही नहीं वरन कई पुरुषों को अपने वाणी–प्रहार से पराजित करती है।

'चल खुसरो घर आपने' की गोदी दो पुत्रियों कुमुद और उमा तथा एक पुत्र लल्लू की माँ है। वह पति के देहावसान पश्चात अपने बच्चों का परवरिश करती है। वह संतान के पथ–भ्रष्ट होने पर भी साहस नहीं छोड़ती। उसकी बौद्धिकता अकथनीय है।

पंजाबी उपन्यासों में भी रचनाकारों ने नारी की बौद्धिकता का किसी न किसी रूप में चित्रण किया है। 'एकता' की प्रिया में बौद्धिकता कूट–कूट कर समाई है। प्रिया निखिलराय चौधरी की प्रियतमा है। उसके माता–पिता उसका परिणय एक अधिवक्ता से कर देते हैं। प्रिया पति की पुत्री विक्की की विमाता है। वह विमाता के अभिशाप से बड़े संयम, धैर्य एवं बहादुरी से विमुक्त होकर विक्की को माता की स्निग्ध छाया देती है। वकील साहब उसके साहस की प्रशंसा करते कहते हैं कि ''विक्की तो तुम्हारी असली बेटी है और मैं तुम्हारा सौतेला पति।'' वह दाम्पत्य–जीवन में आने वाली सम्पूर्ण कठिनाइयों का बड़े साहस एवं धैर्यता से सामना कर विजयी सुगृहणी बनती है।

'दूसरी मंजिल' की मुक्ता विधुर दिलीप राय की दूसरी परिणीता का स्थान लेती है। ''जीवन के रंगमंच पर जब नारी पत्नी के रूप में पुरुष की प्रेरणा स्फूर्ति एवं पूर्ति बनकर आती है, तो उसका स्वरूप और भी सुन्दर, भावतरल, कोमल एवं त्यागमय बन जाता है। विवाह के पश्चात नारी जब पत्नी–रूप को प्राप्त करती है, तब उसके जीवन में ऐसी अनुपम बेला आती है, जिसमें स्वतः ही उसका हृदय मधुर–भावनाओं के चिर–संचित कोष को किसी के चरणों में निछावर कर देने को मचल पड़ता है। उस समर्पण में विवशता नहीं, आत्म संतोष है पछतावा नहीं गर्व होता है।''**67** ''हमारे समाज में पत्नीत्व के प्रांगण में पाँव रखते ही नारी के कर्त्तव्यों की कतार सी खड़ी मिलती है।''**68** मुक्ता विवाह का जोड़ा पहनकर दिलीप राय के गृह में प्रवेश करती है। वह रोमांचित होकर कर्त्तव्य की कठोर–भूमि को अपने स्नेह

समर्पण से सरल बनाकर वह मधुयामिनी में ही दिलीपराय को वश में कर लेती है। दिलीप राय स्तम्भित थे कि 'इस कोमल सी और रेशम के गुच्छे जैसी लड़की के पास क्या है, जिसके अन्दर, उनका जिस्म रेशम के कीड़े की तरह लिपटता जा रहा है।'[69] मुक्ता पहले तो दिलीप राय की पहली पत्नी और पुत्र राहुल की अकाल मृत्यु से भयभीत होती है, लेकिन बड़े वीरता से अपना सम्पूर्ण साहस जुटा दिलीप राय की पहली पत्नी का बाक्स खोलती है, ''.....एक साड़ी आँखों को बड़ी अलग सी लगी–रंगों की पतली लकीरों के जाल में लिपटी हुई.....उस साड़ी को पहनते हुये, मुक्ता को अजीब एहसास हुआ, जैसे वह कपड़े नहीं, जन्म बदल रही हो।''[70] अन्तर का आलोक मुक्ता की साधना का लक्ष्य है, किन्तु बाहर का आलोक उसके जीवन–विकास के लिए अनिवार्य है। बहुत संभव है, कि मोह ग्रस्त मुक्ता को सामाजिक परिवर्तन असम्भव लगता किन्तु सामन्ती एवं पूंजीवाद व्यवस्था में बिना परिवर्तन लाए स्वस्थ व्यक्तित्व का विकास असम्भव है। मुक्ता के जन्म बदलने से लेखिका का यही उद्देश्य है कि उसने बड़े साहस का परिचय देते संकुचित विचारधारा को परिवर्तित करने की अद्भुत बौद्धिकता को प्रदर्शित किया।

'दिल्ली दीआं गलियाँ' की ऐलिस का नेवी आफीसर तनवीर से, परिणय होता है। वह सौन्दर्य और नैतिक–विवेक की प्रतिमूर्ति है। सौन्दर्य–बोध एवं नैतिक विवेक में अलगाव करना कठिन है। ऐलिस का नैतिक विवेक सशक्त एवं प्रबुद्ध है। वह पति को अभियोग से बचाने हेतु स्वयं पर आरोप ले लेती है। ऐलिस का अहम्–कुंठित होकर क्षुब्ध और अस्थिर हो जाता है। वह कैंसर–रोग से पीड़ित हो

जाती है। वह अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में कामिनी के समक्ष इस रहस्य को उद्‌घाटित करती है, ''यह सब झूठ था.....अपने ऊपर इल्जाम मैंने स्वयं लिया था कामिनी। क्योंकि मिस्टर तनवीर को अगर किसी तरह बचाया जा सकता था, तो इस तरह ही।''[71] ऐलिस समाज की निन्दा सह कर, अपने पति को बचाती है। वह तनवीर के व्यक्तित्व की विधायक शक्तिशाली प्रेरक स्त्रोत के रूप में सक्रिय रहती है।

'धुप छां ते रुख' की कमललता आधुनिक प्रगतिशील विचारों की युवती है। उसका परिणय शिक्षक पुरुषोत्तम से होता है। कमललता एक सुप्रसिद्ध नर्तकी है। नृत्य के लिए उसे दूसरे शहरों से भी निमंत्रण आते हैं। पुरुषोत्तम संकीर्ण अहम्‌वादी व्यक्तित्व का पुरुष है। पुरुषोत्तम का रागात्मक संवेग कालेज की शिक्षिका मिस रीटा से होता है। कमललता इस विषय से भली–भांति परिचित है। वह पुरुषोत्तम को सद्‌मार्ग पर लाने के लिए नृत्य करना त्याग देती है। केवल इतना ही नहीं वह पुरुषोत्तम को मिस रीटा से विमुख करने के लिए विपरीत–रीति अपनाती है। वह पति के अहम् को खंडित करने के लिए उसमें ईर्ष्या–भाव जाग्रत करती है। वह अपने कालेज के मित्र कंवल के विषय में मिथ्या–चर्चायें करती है और जानबूझकर बाजार से देर तक लौटती है। कमललता की वैचारिक–बौद्धिकता कारगर होती है। पुरुषोत्तम को कमललता समक्ष पराजित होना पड़ता है। कमललता पुरुषोत्तम के अहम् के उन्नयन एवं परिष्कार के लिए नानाविधि प्रयत्न करती है और अन्त में विजयी होती है।

5-7-2 **पलायन (भय) :**

मानव–जीवन में पलायन अथवा भय भी एक महत्वपूर्ण संवेग है। शारीरिक कम्पन, अंग–शिथिलता, नेत्र–विषमता आदि इससे उत्पन्न क्रियाएं हैं। मैक्डूगल के कथनानुसार ''विनाशकारी तत्वों से दूर भागने के रूप में भय जीवन–रक्षा के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भावना है। इतना ही नहीं मानव के धार्मिक भाव–विकास में भी कल्पित देव शक्तियों में दण्ड–प्राप्ति का भय अत्यधिक सक्रिय रहा है।''[72] हिन्दी–महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में पलायन–प्रवृत्ति का सीमित वर्णन किया है।

'श्मशान चम्पा' की नायिका चम्पा की सगाई डॉ0 मधुकर से होती है। ''उसे न जाने कौन सी शक्ति अदम्य उत्साह से भर गई.....आज तक जिसके निष्कलुषचित्त में कभी विकार की एक रेखा भी नहीं उभरी थी, वही चम्पा अब रात को बेचैन करवटें बदलने लगी। नियति ने ही उसके लिये उस बंधन की सृष्टि की थी और वह स्वयं उस बंधन में बंधने को व्याकुल हो उठी थी। डाकिया आता, तो वह बड़ी उत्कंठा से लपकती, क्या पता उसका मंगेतर उसे चिट्ठी ही डाल दे.... प्राणांतक यंत्रणा से छटपटा उठी थी। क्या सोचेगा उसका प्रेमी? वह जितनी ही बार पत्र लिखने बैठती उसका अस्वाभाविक रूप से संकोची–स्वभाव उसकी बाँह थाम लेता।''[73] सहसा चम्पा की सगाई टूट जाती है। अकस्मात एक दिन मधुकर से उसकी भेंट होती है। चम्पा मधुकर को पुनः पाकर प्रफुल्लित होती है। उसे मधुकर की जेब से जया के पत्र मिलते हैं। चम्पा जया के पत्र पढ़ती है। पत्र के

एक–एक मौलिक संबोधन उसे वृश्चिक डंक देते चले गये। प्रत्येक पत्र में एक ही निवेदन था कि यदि मधुकर ने उससे विवाह नहीं किया तो वह आत्महत्या कर लेगी। चम्पा ने पत्र पढ़कर वहाँ से जाने का संकल्प लिया, ''अपने सुनहले भविष्य के जिस भव्य प्रासाद की अटारी पर वह वैभव को स्वयं ही अविश्वास से निहारती मुग्ध खड़ी थी, उसे किसी ने देखते ही देखते डायनामाइट से उड़ाकर भूमिसात कर दिया था। सुख के शिखर पर पहुँचाकर स्वयं नियति ने ही उसे निर्मम हृदय हीनता से नीचे गिरा दिया था।''[74] वह नहीं चाहती कि उसके लिए जया आत्महत्या करे। इसलिए चम्पा जया की खुशी के लिए मधुकर के जीवन से पलायन करती है।

'वीरान रास्ते और झरना' की अचला हीनता की शिकार है। उसकी माता एवं चाचा में अवैध–सम्बन्ध है। अचला इस परिवेश से घृणा करती है। वह आन्तरिक द्वन्द्व से त्रसित है। अचला की भेंट शैलेन्द्र से होती है। शैलेन्द्र अपने प्रणय की स्निग्ध–धारा से उसकी कुंठा का निवारण करता है। शैलेन्द्र के विरह–क्षणों में अचला पुनः अवसाद और घुटन से पीड़ित होती है। वह दम घोटू वातावरण से उन्मुक्त होने के लिए अमर के प्रति आकर्षित होती है। वह कुंठित होकर जीवन–यथार्थ से पलायन करती है। अचला को जीवन–यथार्थ को स्वीकारने और उसे सबल बनाने में उसके प्रियतम शैलेन्द्र का सम्पूर्ण सहयोग है। शैलेन्द्र पुनः अचला के जीवन में पदार्पण करता है और अचला को अपनाकर उसको जीवन–जीने की कला में निपुण बनाता है।

'कृष्णकली' की कृष्णकली यौनमूलक परिवेश में पली है। उसमें अप्राकृतिक यौन–चेष्टाएं उत्पन्न होती हैं। उसकी लिबिड़ो–ग्रन्थि का कुतूहल यौनात्मक विचारों

की ओर और भी अधिक उग्र हो जाता है। वह आत्म–प्रदर्शन करते और रसिकों का हृदय शान्त करते ऊब जाती है। वह आत्म–तुष्टि हेतु सच्चे प्रियतम को पाना चाहती है। वह प्रवीर पर आसक्त हो जाती है। ''प्रवीर भी उसके सौंदर्य–कोष से अछूता नहीं रह सका। बिजली की चमक दिखाकर वह अधिक प्रभा से प्रवीण को सचमुच चौंधिया गयी थी। लड़की का सौंदर्य अपने समस्त अवगुणों के बावजूद दिव्य था, उसमें कोई सन्देह नहीं। .....सादे ढ़ंग से संवारे गये काले केश.....जैसे कोई विदेशी राज महिषी....चली जा रही हो।''**75** वह यौनात्मक संतुष्टि हेतु प्रवीर की सगाई वाले दिन अपनी सगाई का जश्न मनाती है ''.....जिस दिन तुम्हारी सगाई हुई थी, उसी दिन मैंने भी अपनी सगाई का उत्सव मनाया था, जानते हो कहाँ? श्मशान में.....तुम्हारी कुन्नी की सी साड़ी पहनकर मैं मन ही मन तुम्हारी वाग्दत्ता बनकर इठलाने लगी थी। मेरे अतिथि थे, अर्थी में बंधकर आये मुर्दे।''**76** कृष्णकली प्रवीर और कुन्नी को दाम्पत्य–जीवन को सुखमय बनाने के लिए वहाँ से पलायन कर जाती है। वह प्रियतम के रास्ते से बहुत दूर चली जाती है। वह अपनी जीवन–लीला समाप्त कर इस संसार से भी सदैव के लिए पलायन कर जाती है।

'कोरजा' की कम्मो अनाथ है। कम्मो की परवरिश उसकी चाची करती है। चाची का कठोर अनुशासन और निरन्तर वर्जना से वह अन्तर्मुखी हो गई थी। कम्मो के जीवन में ''बरसो के बन्द लौह–कपाट तोड़ कर पहली बार कोई पुरुष घुसा था।.....आईने में पहली बार कम्मो ने अपने को निहारा, तो लगा जैसे जिन्दगी में पहली बार आईना देखा है।'' कम्मो की अमित के प्रति आसक्ति दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। एक दिन वर्षा में भीगने पर कम्मो की लिबिडो–ग्रन्थि उद्वेलित

हो उठी ''नहीं–अमित अब नहीं लौटो.....। वरना मैं इस भड़की वासना की आग में झुलस जाऊँगी, प्लीज। दान कर दों.....। अमित घबरा गया ''कम्मो लगता है अब तुम्हें अपनी सच्चाई बतानी ही पड़ेगी। जानती हो कम्मो, मैं एक नपुंसक मर्द हूँ।''[77] प्रियतम अमित से कम्मो का अनुराग पवित्र और सच्चा है। वह अमित की मृत्यु–पश्चात स्वयं भी इस संसार से सदा के लिए पलायन कर जाती है। वह भी अपने गले में फाँसी लगा लेती है। ''साइकॉलोजी ऑफ सेक्स'' में पशु–पक्षियों में भी विशुद्ध प्रेम के विकास का वर्णन है। एक चिड़िया का उदाहरण मनोविज्ञान में दिया गया है। जिसमें जोड़े में से एक की मृत्यु हो जाने पर दूसरे की भी मृत्यु हो जाती है।[78] कम्मो 'साइकॉलोजी ऑफ सेक्स' का अनुपम एवं ज्वलंत दृष्टांत है।

'एक इंच मुस्कान' की अमला लिबिडो–ग्रन्थि से ग्रसित है। अमला किशोरी बाबू की परित्यक्ता है। पति द्वारा त्याग दिये जाने पर वह पति के यहाँ रहती है। वह स्वयं स्वीकारती है ''पति के घर से आने के कुछ समय बाद ही एक बात मेरे मन से धीरे–धीरे घर करती गई थी, कि मुझे सब प्रकार की सीमाओं को तोड़ना है। पति और परिवार ही नारी का सबसे सशक्त बन्धन होता है। जब वही टूट गया तो और किसी बन्धन में मैं अपने को क्यों बँधने दूँ?'' वह स्वतंत्रता की दम्भी चादर ओढ़ लेती है उसके जीवन में कई पुरुषों का आगमन होता है। उनमें से लेखक अमर भी एक है। अमर भी अमला के पत्र–व्यवहार से प्रभावित है। अमला उसकी सृजन–शक्ति भी है किन्तु अमला के अन्तस की भारतीय नारी उस पर हावी है। वह अपने जीवन से हताश हो जाती है। घबराई, थकित, अवसाद ग्रस्त अमला जीवन से पलायन कर आत्महत्या कर लेती है।

पंजाबी उपन्यासकारों ने भी नारी की पलायनवादी–प्रवृत्ति की कहीं–कहीं अभिव्यक्ति की है। 'जेबकतरे' की सविता एम0ए0 उत्तरार्द्ध की छात्रा है। फ्रायड ने ''मनुष्य की मूल परिचालिका काम–प्रवृत्ति को माना है। उसके मतानुसार 'काम या सेक्स स्थूल शारीरिक भूख है और वह स्त्री–पुरुष के प्रेम का आधार है।''[79] सविता में भी काम–प्रवृत्ति विद्यमान है। वह रवि से रागात्मकता बढ़ाती है। 'इस दोस्ती की पतली सी पगडंडी पर एक दिन अचानक विवाह की गुफा आ जायेगी और उनके पास इस गुफा में पनाह लेने के अलावा और कोई चारा नहीं रह गया।.....[80] वह अपने पिता को रवि के प्रणय के विषय में बताने में भयभीत होती है। अंततः घर से पलायन कर वह रवि से परिणय करती है। उसका रवि से परिणय घबराहट पूर्ण और साधारण वातावरण में होता है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि सभी नारियों में न्यूनाधिक रूप में भीरुता पाई जाती है। एक तो नारी शारीरिक रूप से निर्बल होती है और दूसरे कुछ पुरुषों में पाशविक–वृत्ति की प्रधानता के कारण नारी भीरूपन को महसूस करती है। यह प्रवृत्ति सविता में भी पाई गई है। वह भी अपने पिता का गुस्सा सुनकर भय के मारे इन दो शब्दों को दोहरा लेती थी, '' माई गाड।''[81] भीरूतावश वह पापा के समक्ष अपने प्रियतम के बारे में कहने में असमर्थ है। इसीलिए वह गृह–पलायन करती है।

'एरियल' उपन्यास की नायिका ऐनी अनवर के अनुराग से अनुरंजित है। हरबर्ट स्पेन्सर 'प्रेम को काम शारीरिक आवेग, सौन्दर्य भावना, लगावट और प्रशंसा भाव आदि में मानते हैं।'[82] ऐनी भी अनवर के प्रेम में विभोर होकर अपने

माता–पिता को बिना बताए एक रात्रि में घर से पलायन कर जाती है। ऐनी और अनवर का परिणय हो जाता है, लेकिन अनवर का ऐनी के प्रति प्रणय, सौंदर्य एवं वासनामूलक है। वह कुछ अन्तराल पश्चात् ऐनी को छोड़कर लिज नामक युवती के साथ रहने लगता है। ऐनी की पलायन–प्रवृत्ति अब अनुकूल–मार्ग अपनाकर उसे साहसी बनाती है। भीरू प्रवृत्ति की ऐनी स्वावलम्बी बन, अपना जीवन–निर्वाह करती है।

'ऐहु हमारा जीवणां' की भानो का परिणय सरवन से होता है। भानो का दाम्पत्य–जीवन सुखी था। अकस्मात ही सरवन की अकाल–मृत्यु हो जाती है। सरवन की मृत्यु–पश्चात भानो को वैधव्य–जीवन व्यतीत करना पड़ता है। भानो के पिता लम्पट एवं लालची है। वह भानो को एक वृद्ध के हाथ बेचना चाहता है। भानो को पिता के इस कुकृत्य का आभास हो जाता है। वह पितृ–गृह से पलायन कर गंगा में कूद कर आत्महत्या करना चाहती है। भानो जब गंगा में छलांग लगाती है तब नारायण उसे बचाकर अपनी पत्नी बनाता है। भानो को पितृ–गृह की परिस्थितियां पलायन और आत्म–त्याग करने को विवश करती हैं।

'दूसरी सीता' की सीता नाथ की परिणीता है। सीता का पति–प्रेम शुद्ध, सरल और निःस्वार्थ है। वह पति के प्रति समर्पित पत्नी है। अकस्मात् शेर सिंह सीता का अपहरण कर लेता है। शेर सिंह की वासनात्मक प्रवृत्ति को देखकर सीता समक्ष कर्त्तव्य और अस्मिता का प्रश्न खड़ा होता है। तब उसमें आत्मरक्षा के लिए पलायन–प्रवृत्ति निर्मित होती है। वह शेर सिंह के चंगुल से भागकर हरिद्वार चली जाती है। सीता पलायन कर अपने सतीत्व को भंग होने से बचा लेती है।

'सब देश पराया' की ज्योति प्रोफेसर गौतम की परिणीता है। ''पति–पत्नी में अथाह प्रेम सागर हिलोर ले रहा था। संसार में सत्य को ही शब्द से व्यक्त करना हो तो उसे प्रेम कह सकते हैं।''[83] ज्योति का दाम्पत्य–जीवन सुख और समृद्धि से सम्पन्न था। 'पति के लिए सुशील, सुन्दर, कर्त्तव्य–परायण पत्नी उपहार सम होती है। उसका सहयोग स्वर्ग समान सुखदायी होती है।'[84] गौतम की अकाल–मृत्यु हो जाती है। पति गौतम की स्निग्धता, पारिवारिक सम्पन्न्ता की छाया में खुशहाल ज्योति पति देहावसान–पश्चात् अवसाद से त्रसित हो जाती है। वह पुरा–स्मृतियों में प्रतिगमन करती है। वह भयभीत वर्तमान से पलायन कर पूर्वकालिक स्वर्णिम स्मृतियाँ में चली जाती हैं। वह अपने पुत्र बिल्लू को कहती है ''आ लेण दे तेरे डैडी नू दसूँगी...जे भला गौतम इस गड्डी आ जावे। ओसने मन ही मन विच किहा..।''[85] वह जीवन के यथार्थ से समायोजन करने में असमर्थ है। वह जीवन से पलायन कर आत्महत्या कर लेती है।

5-7-3 **क्रोध :**

आचार्य भरत मुनि ने क्रोध की उत्पत्ति संघर्ष, कलह, विवाद एवं प्रतिकूल विषय आदि विभावों से मानी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल दुःख के चेतन कारण के साक्षात्कार या अनुमान से क्रोध की उत्पत्ति मानते हैं। हिन्दी उपन्यास–महिला रचनाकारों ने अपने उपन्यासों में नारी पात्रों के क्रोध–भाव का सहज स्वाभाविक चित्रांकन किया है। 'भैरवी' उपन्यास की रुकमणी रूपवती है। उसमें गर्व–ग्रन्थि की अधिकता है। रुकमणी की अन्यमनस्कता से गजानन को अत्यधिक आघात होता है।

उसके लिए प्रेम के अस्तित्व के बिना विवाह–सम्बन्ध निस्सार है। इसीलिए वह नाना प्रकार से रुकमणी को प्रसन्न करने का प्रयास करता है। गजानन की व्यावसायिक–समृद्धि से गृह में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं है। रुकमणी है कि उसका क्रोध सातवें आसमान पर रहता है। यदि गजानन कृपणता कर कुछ संचय करने की सोचता भी है तो रोबदार रुकमणी उसे चीर कर रख देती। रुकमणी के क्रोध के सामने गजानन का पुरुषार्थ पंगु हो जाता है।

'कृष्णकली' की जया एक सुशिक्षित और सौंदर्यमयी नारी है। ''प्रेम ही ऐसा तत्व है जो दो व्यक्तियों के मन को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है, उसी से व्यक्ति के व्यक्तित्व में बल और पूर्णता आती है और जीवन के विकास के लिए सच्चा आधार मिलता है।''[86] दामोदर में कामुक–प्रवृत्ति की अधिकता है। वह अपनी पाशविक तृष्णा–पूर्ति हेतु विविध स्त्रियों से सम्पर्क बनाता है। पति के दिन–रात की इस व्यभिचार–लीला पर जया क्षुब्ध हो उठी। उसका चेहरा क्रोध से लाल पड़ गया। क्रोध–भावाधिकता के कारण जया की विचार–शक्ति क्षीण हो जाती है। वह सद्मार्ग त्याग कर अधोगति अपनाती है।

'मेरा नरक अपना है' उपन्यास की शीला हीरेन की परिणीता है। हीरेन में पुरुषत्व का अभाव है। हीरेन लिबिडो–ग्रन्थि के अभाव के कारण कुंठित रहता है। शीला जब–जब पति से सहवास करती, उसकी कामान्धता तीव्रतर हो जाती वह क्रोधित हो उठती ''बड़ी मर्दानगी दिखाने चले थे। क्या हुआ? मर्दानगी हो तब न।''[87] शीला की मातृत्व–भावना अतृप्त दिखाई गई है। उसका लिबिडो प्रबल है। लिबिडो–ग्रन्थि की प्रखरता को हीरेन संतुष्ट करने में असमर्थ है। इसलिए वह सदैव हीरेन पर क्रोधित रहती है।

'स्वामी' की मिनी के प्रेम की एकाग्रता और तीव्रता के कारण पति–पत्नी के बंधन ढीले पड़ गए हैं। मिनी विवाह–पूर्व प्रेम की स्मृतियों में जीती है। मिनी का परिणय उसकी इच्छा–विरुद्ध घनश्याम से हो जाता है। मधुयामिनी को ''उसका मन एक विचित्र सी दहशत से भर गया। ....जो ब्याह कर लाया है। वह अपना अधिकार छोड़ेगा।.....इस कल्पना मात्र से उसका मन घृणा से भर आया।....एकाएक एक विचार उसके मन में कौंधा। उसने कमरे के कोने में चटाई बिछाई और दीवाल की ओर मुँह करके लेट गई। समझदार व्यक्ति के लिए यही क्या काफी नहीं है।''**88** घनश्याम के यह कहने पर कि ''तुम जमींन पर सोना पसन्द करती हो तो कम से कम गद्दा तो बिछा लो, शरीर दर्द करने लगेगा न।'' मिनी अपमान–बोध से तिलमिला उठी। ''आज नरेन्द्र के साथ उसकी सुहागरात होती तो ....जाने कितने मधुर चित्र आँखों के सामने उभरने लगे.....किसी की हथेलियों में थमे हुए अपने चेहरे के बहुत–बहुत निकट उसने किसी का चेहरा महसूस किया और मन पुकार उठा, तुम कहाँ हो नरेन्द्र.....मुझे यहाँ से ले जाओ। इस हुए को अनहुआ कर दो।''**89** मिनी की दमित कामेच्छा क्रोध के रूप में प्रकट होती है। प्रेमी पाने में असफल मिनी पति घनश्याम पर अकसर आग बबूला होती है। घनश्याम ने मिनी से जेवर की माँग की तब तिलमिला उठी, ''उसने अलमारी खोली। एक–एक गहना उठा–उठाकर वह पलंग पर फेंकने लगी, ''लो...लो''। फिर उसने अपनी जरी की साड़ियाँ भी निकाल कर फेंक दी, ''इन्हें भी संभालो।.....''**90** मिनी का पति पर क्रोधित होना उसके दमित–लिबिडो का उद्वेलन है। अंततः मिनी घनश्याम के सद्चरित्र से सामान्य हो जाती है।

'एक इंच मुस्कान' की रंजना अमर की परिणीता है। अमर की पत्र–मित्र अमला की सायास मुस्कान उसे सृजन की प्रेरणा देती है। रंजना अमर की पतिव्रता पत्नी है। रंजना अमर पर अपने प्रेम का एक मात्र अधिकार समझती है। इसलिए वह अमर को रिक्त नहीं छोड़ना चाहती है। उसे अमला का अमर के जीवन में हस्तक्षेप और स्वच्छन्द व्यवहार कदापि सहन नहीं है। वह अमर के सम्पूर्णप्रेम पर अपना अधिकार पाना चाहती है। अमला जब अमर से मिलने उसके घर आती है। तब रंजना ईर्ष्याग्नि से क्रोधित होकर अमर की छाती पर सिर पटक–पटक कर कहती है ''मुझे मार डालो अमर, मुझे मार डालो! नहीं तो मैं खुद मर जाऊँगी। पोटेशियम साइनाइड खाकर मर जाऊँगी.....इस तरह मुझसे नहीं जिया जाता।'' रंजना को पति–पत्नी के बीच अमला का प्रवेश कदापि सहन नहीं। उसके कारण उनका दाम्पत्य–जीवन कटु हो जाता है। उनके गृह में अमला को लेकर अकसर लड़ाई–झगड़े होते रहते हैं।

पंजाबी उपन्यास लेखिकाओं ने भी नारी के क्रोध–संवेग को उपन्यासों में वर्णित किया है। 'जयश्री' की कंदला शिक्षित, सम्पन्न, शील, साहसी, मनस्विनी, परम्पराओं को चुनौती देने वाली नारी है। उसके व्यक्तित्व में ज्ञान, रूप और रागात्मकता का अविकल समाहार है। वह क्लबों में नए–नए पुरुषों से समागम करती। वह विपन्न सुरेशर को प्रियतम रूप में वर चुकी है। सुरेशर उसकी रागात्मक–प्रवृत्ति से परिचित है, 'कन्दला शराब है, मस्ती है, तलखी है, एक बार पीने को मन करता है।'[91] प्रियतम की विरहावस्था उसे क्रोधित एवं व्यथित करती है। वह आवेग के क्षणों में रुदन करती दिखाई देती है।

'पीले पत्तेयां दी दास्तान' की ऊषा पी0सी0एस0 अफ़सर भगीरथ की परिणीता है। भगीरथ का कठोर एवं क्रूर नियंत्रण उसमें गहरा असंतोष उत्पन्न करता है। इसी असंतोष के कारण उसमें पीड़ित होने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। लैंगिक–अभुक्ति के कारण उसकी यह प्रवृत्ति अत्यधिक क्रियाशील और शक्तिशाली हो गई। ऊषा जो अब तक रागात्मक–दमन कर एक, कठपुतली बन गई थी। अब उसके अन्तस में विद्रोही–प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगी। पति का वार्त्तालाप उसे सर्प–दंश समान प्रतीत होने लगा। वह क्रोधित हो उठी, 'उसका मन हुआ विक्स वाली शीशी धरती पर पटक दे और सीधी तन कर उससे पूछे कि सारी रात पता नहीं कहाँ–कहाँ धक्के खाकर सबेरे–सबेरे क्या बक रहे हो।''[92] ऊषा के व्यक्तित्व में एक अन्तर्विरोध है। इस अन्तर्विरोध के कारण उषा कभी क्रोधित होती है, कभी रूदन करती है। यदि हम उषा की आन्तरिक परिस्थितियों का निरीक्षण करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यह उसके अभिशप्त जीवन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

'तर्कस टंगिआ जंड' की रुक्की का परिणय जगीरु से हुआ है। जगीरु एक मजदूर है। वह गुरुबचन सिंह के खेतों में डेढ़ सौ रुपये प्रतिमाह की मजदूरी करता है। गुरुवचन सिंह के पुत्र बलवीर सिंह को पुलिस शराब के अभियोग में गिरफ्तार करने आती है। तब गुरुबचन सिंह पुत्र बलवीर सिंह की जगह यह अभियोग जगीरु पर लगा देता है। जगीरु अपने मालिक के विरुद्ध बोलने में असमर्थ है। जगीरु के चुपचाप अपराध सहने पर रुक्की क्रोधित हो उठी। उसके अन्तस में गुस्से से उबाल उठते हैं ''ओसने क्यों सरदार दी हामी भरी?.....चलो ओ जाणे सरदार नौकरी तो

जुआब दे दिंदा .....दो डंग भुखे कट लैंदे....।''[93] रुक्की का यह क्रोध–संवेग पति पर निरपराध होकर अभियोग सहने के विरुद्ध है। इस क्रोध में रोष भी है, अत्याचार के विरुद्ध लड़ने का साहस भी और पति–स्नेह भी है।

5-7-4 **दैन्य और दासत्व :**

आचार्य भरत मुनि ने ''दैन्य की उत्पत्ति दुर्गति और मनस्ताप आदि से मानी है। अधीरता, सिर–दर्द शरीर का भारीपन, अन्यमनस्कता एवं शरीर–शुद्धि का त्याग आदि इसके अनुभाव हैं।''[94] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने दैन्य के दो रूपों का वर्णन किया है–''भय आदि भाव जनित और प्रकृति गत। भय–जनित दैन्य में व्यक्ति–मानापमान का भाव भूलकर आलम्बन के सम्मुख हाथ जोड़ता, गिड़गिड़ाता और अपनी तुच्छता की अभिव्यक्ति करता है। इसी प्रकार भक्ति जनित दैन्य में भक्त आराध्य के सम्मुख आत्म–लघुता की सुखद अनुभूति करता है। प्रकृतिगत दैन्य सहज विनम्रता के रूप में व्यक्त होता है।''[95]

हिन्दी महिला उपन्यासकारों ने पत्नी के दैन्य और दासत्व का वर्णन अपने उपन्यासों में किया है। 'शेष–यात्रा' की अनुका प्रणव की परिणीता है। प्रणव देर रात तक घर से बाहर रहता है। अनु इसका कारण पूछती है तो प्रणव कहता है ''छोड़ दो मुझे'' अनु ने उसके मुँह पर हाथ रख कर कहा, ''ऐसी बात कभी फिर मत कीजिएगा। हंसी में भी नहीं। मैं जहर खाकर मर जाऊँगी।''[96] अनुका पति के दुराचार, अत्याचार और कर्त्तव्यहीनता–सम्मुख भी मौन रहती है। अनु के इस प्रकार के चित्रण से उसकी दैन्यता का दर्शन होता है। यदि सूक्ष्म निरीक्षण करें तो कह

सकते हैं कि पत्नी इस प्रकार मौन रहकर अपने कर्त्तव्य और दायित्व का उचित पालन नहीं करती। उसे पति के गंभीर दोषों की अवहेलना कर उसे सद्मार्ग पर लाने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए किन्तु अनु अपने को पति की दासी समझती है। वह पति से दैन्यतावश निवेदन करती है, ''मैं कुछ नहीं मागूँगी।.....बस आप मुझे अपने साथ रख लें, मुझे अलग न करें।''[97] अनुका में साहस का अभाव है। इसलिए वह पति के सामने, दीनता और दासत्व की याचना करती है।

'परछाइयों के पीछे' की सुमित्रा का परिणय महिपाल से हुआ। महीपाल दुराचारी, अत्याचारी और चरित्रहीन है। वह सुमित्रा से लड़ाई–झगड़ा करता है। वह उससे दोनों पुत्रियाँ छीन उसे गर्भावस्था में निष्कासित करता है। सुमित्रा महिपाल द्वारा किए गए अत्याचारों को सहती है। वह यह सोचकर संतोष कर लेती है कि ''राम के काल से यही रीति चली आई है, कि पुरुष किसी न किसी ओट में नारी को त्रास दे।''[98] सुमित्रा परम्पराओं में आस्था रखती है। इसीलिए वह दासत्व भाववश पति के सभी अत्याचारों को सहती है। अंत में विशाल ह्रदया सुमित्रा पति के सभी अत्याचारों को क्षमा कर पति के पास अम्बाले चली जाती है।

'अमलतास' की कामदा पति हरदेव लाल की प्रताड़ना और उपेक्षा के पश्चात भी उसके चरणों की दासी बनकर रहती है। वह अपने दाम्पत्य–जीवन से अत्यधिक दुःखी होने पर भी पति की हर इच्छा को शिरोधार्य मानती है। वह पति के कहने पर ''बताओ तुम मुझे जाम पिला सकती हो?''....''पिला सकती हूँ।'' कामदा ने सहमी आवाज में कहा।''[99] वह पति के सामने दीनता पूर्वक एक दासी की तरह रहती है और पति की हर उचित अनुचित इच्छा की पूर्ति करती है।

'सुरंगमा' की राजलक्ष्मी का गजानन जोशी से परिणय होता है। गजानन जोशी पंडिताई की गेरुआ चादर ओढ़ भोले–भाले लोगों को ठगता है। उसकी धोखा–धड़ी राजलक्ष्मी को अनुचित लगती है लेकिन दुष्ट और लम्पट गजानन के समक्ष उसकी एक नहीं चलती। गजानन राजलक्ष्मी को सदैव प्रताड़ित करता है। वह उसके साथ कटु–व्यवहार करता है। राजलक्ष्मी दासता सहने के लिए विवश है। वह पति के दासत्व से आक्रान्त हो, आत्म–हत्या करने का भी प्रयास करती है किन्तु दुर्भाग्यवश रोबर्ट उसे बचा लेता है। गजानन को जब यह ज्ञात होता है तब वहाँ जाकर भी राजलक्ष्मी को मारता पीटता है और प्रताड़ित कर कहता है कि ''कुलटा तुझे आज नहीं छोडूँगा।'' राजलक्ष्मी गजानन की प्रताड़ना और दासता से अत्यधिक आक्रान्त है।

पंजाबी–उपन्यास लेखिकाओं ने भी नारी की दीन–हीन दशा को चित्रित किया है। 'पिंजर' की पूरो को विवाह पूर्व ही रसीद अपहृत कर लेता है। वह पूरो से हमीदा बन जाती है। वह स्वप्नलोक के विचरती है। फ्रायड के अनुसार ''स्वप्न के द्वारा व्यक्ति अपनी दमित–भावनाओं को व्यक्त करके मानसिक स्वास्थ्य लाभ करता है। क्योंकि काम सम्बन्धी भावनायें दमित होकर अचेतन में चली जाती हैं, यद्यपि ये भावनाएं बाह्य रूप से शान्त प्रतीत होती हैं परन्तु आन्तरिक रूप से सर्वदा सजग रहती हैं तथा अचेतन मन से बाहर आने का मार्ग खोजती रहती हैं ''निद्रावस्था में चेतन मन का अंकुश शिथिल पड़ जाता है। अतः ये भावनायें स्वप्न के मार्ग द्वारा, स्वच्छन्द होकर विचरण करने लगती हैं।''**100** ''मानसिक अन्तर्द्वन्द्व के परिणामस्वरूप ही दमन की प्रक्रिया होती है।''**101**

पूरो (हमीदा) ने भी इसी दमनात्मक प्रक्रिया स्वरूप सोना और खाना कम कर दिया है। अब उसके अन्दर न कोई उत्साह है, न कोई उत्सुकता है। वह एक लाश मात्र है। वह मात्र एक रोटी के सहारे पूरा दिन काट लेती थी। उसके अन्दर जीवन–जीने की कोई लालसा ही नहीं रह जाती। रसीद से उसे घृणा होती है। वह दीन–हीन दशा में जीवन–यापन करती है। उसे लगता जैसे रसीद ने उसे धर्म के पिंजरे में कैद कर रखा है। उसका व्यक्तित्व दैन्य और दासता के बोझ से बोझिल है।

'एकता' की एकता का रघु से प्रणय होता है। उसका विवाह पूर्व का अनुराग परिणय में परिवर्तित होता है। रघु का स्वभाव दिन प्रतिदिन उग्र होता जाता है। रघु की एकता के प्रति कटु विद्वेष की भावना दिन–प्रतिदिन बढ़ती जाती है। जिसके फलस्वरूप एकता का दाम्पत्य–जीवन दुःखदायी हो जाता है। रघु की अन्य लड़कियों के साथ अनुचित सम्बन्ध स्थापित करने की लालसा और कुचेष्टाएं एकता के अन्तःकरण को दुःख पहुँचाती है। वह हीनता अनुभव करती है। ''मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मनुष्य अपनी असफलताओं को दूसरों पर आरोपित करना चाहता है–यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में नियति को माना जाता है क्योंकि मनुष्य विधि का विधान मानकर निराशा से मुक्ति पा लेता है।''[102] रघु एकता से तलाक ले लेता है। एकता भी नियति का विधान मानकर अपने कष्टों को कम करना चाहती है। एकता रघु के अत्याचारों, उसके कुत्सित व्यक्तित्व की दासता की निवृत्ति, हेतु अपने भतीजों के साथ क्रीड़ा करती है।

'आल्हणा' की नीना विवाह–पूर्व तेज के प्रति अनुरक्त है। नीना का परिणय जगन से होता है। जगन को नीना विवाह से पूर्व के तेज के प्रेम के विषय में सब सत्य बता कर देती है, जिससे विवाहोपरान्त जगन उसे प्रताड़ित न करे किन्तु जगन दुराचारी और लम्पट है। वह नीना को दासत्व की श्रृंखला में जकड़ना चाहता है। वह नीना पर अत्यधिक अत्याचार करता है। नीना जब मायके जाती है तो जगन द्वारा किए गए एक–एक अत्याचार की परतें उसकी स्मृति को पीड़ा पहुँचाती हैं।

'पीले पत्तेयाँ दी दास्तान' की उषा पी0सी0एस0 अफ़सर की परिणीता है। पति का रंगीन मिजाज ऊषा को दासता की जंजीरों में जकड़े है। उषा पति की प्रत्येक उचित–अनुचित मांगों की पूर्ति के लिए बाध्य है। पति रात–रात भर रागात्मक–क्रीड़ा–कलाप में संलग्न रहता है और प्रातः घर आकर उषा पर अत्याचार करता है, 'उषा का मन हुआ कि विक्स वाली शीशी धरती पर पटक दे और सीधा तन कर उससे पूछे कि सारी रात पता नहीं कहाँ–कहाँ धक्के खाकर सबेरे–सबेरे क्या बक रहे हो' उषा को पति की प्रताड़नाओं को एक दासी की तरह सहन करना पड़ता है।

'सूरज ते समुन्दर' की सोना लेखक इन्दर की परिणीता है। इन्दर चरित्रहीन और कुंठित व्यक्तित्व का है। विवाह पूर्व बंधी प्रणय–ग्रन्थि के कारण इन्दर–सोना की उपेक्षा करता है। इन्दर सोना को प्रताड़ित करता है। सोना पति के दासत्व बोझ को तो झेल रही होती है कि अचानक एक सन्त उसके शरीर का शोषण करता है। दाम्पत्य जीवन की विसंगति और सन्त द्वारा किए गए बलात्कार से सोना

तिल–तिल कर घुलती जाती है। वह अपने पति के प्रति तन–मन–धन से समर्पित है किन्तु पति के कटु–व्यवहार से वह विक्षिप्त सी हो जाती है। उसकी विक्षिप्तावस्था को स्वस्थ करने का श्रेय उसके देवर अजीत को जाता है। अजीत सोना का उपचार और सेवा कर, उसे सामान्य बनाने में पूर्ण सहयोग देता है।

हिन्दी–पंजाबी उपन्यासों में वर्णित नारी–पात्रों की मूल भाव–व्यंजना के आधार पर यह निष्कर्ष उपलब्ध होता है कि रागात्मक–वृत्ति पर आधारित मातृ–भावना, आध्यात्मिक–प्रेम, देश–प्रेम व मानव–प्रेम आदि का मनोवैज्ञानिक और स्वाभाविक चित्रण लेखिकाओं ने किया है। मानव–हृदय के एकाकीपन की व्यग्रता का चित्रण हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं ने अत्यन्त मार्मिक रूप में किया है। इसके अतिरिक्त धर्म के लौकिक तत्व और प्रेम के स्वरूप का विशद चित्रांकन इनके उपन्यासों में हुआ है। मानव–प्रेम करुणा पर आधारित होकर वात्सल्य की परिष्कृत अभिव्यक्ति के सहज रूप में प्राणी–मात्र को अपने स्नेहामृत से सिंचित करता है। रागात्मक वृत्तियों की मूल भावनाओं के मनोवैज्ञानिक चित्रण के साथ महिला उपन्यासकारों ने विरागात्मक वृत्तियों का भी सजीव और स्वाभाविक वर्णन किया है। घृणा अथवा विकर्षण की अभिव्यक्ति 'पिंजर' की पूरो में स्थूल रूप की अपेक्षा सूक्ष्म रूप में अधिक की गई है। क्रोध एवं बौद्धिकता का वर्णन पंजाबी उपन्यास लेखिकाओं का बड़ा ही सहज बन पड़ा है। दासत्व के शुद्ध रूप के स्थान पर दैन्य के आंगिक रूप में उसकी अभिव्यक्ति हुई है। दैन्य–भाव के स्वतंत्र रूप के स्थान पर असफलता, त्रास, प्रेम, शोक, श्रृद्धा आदि के रूप में अभिव्यक्ति हुई है। पलायन–प्रवृत्ति का वर्णन हिन्दी एवं पंजाबी दोनों ही उपन्यासकारों ने अपने–अपने

ढंग से किया है। इस पलायन–प्रवृत्ति से कुछ नारियाँ तो गृहस्थी से उदासीन हो संन्यास–व्रत लेती हैं। 'भैरवी' की भैरवी इसी कोटि के अन्तर्गत आती है। कुछ नारियाँ आत्महन्ता–प्रवृत्ति को अपनाती हैं। अहम् वृति का चित्रण अत्यन्त विशद और व्यापक रूप से हुआ है। अस्तु हिन्दी–पंजाबी महिला उपन्यासकारों ने नारी–पात्रों के मूल–भावों का अत्यन्त मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है।

सन्दर्भ संकेत

1. डा0 जदुनाथ सिन्हा – इंडियन साइकोलॉजी भाग–2 – पृ0सं0 –128
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – चिन्तामणि, भाग–1 – पृ0सं0 –97
3. शिवानी – कृष्णकली – पृ0सं0 –12
4. शिवानी – सुरंगमा – पृ0सं0 –198
5. विलियम मैक्डूगल – एन आउट लाइन ऑफ साइकोलॉजी – पृ0सं0 –130, 131
6. विलियम मैक्डूगल – एन इन्ट्रउक्शन टू सोशल साइकोलॉजी – पृ0सं0 –231
7. शिवानी – श्मशान चम्पा – पृ0सं0 –44
8. शिवानी – किशनुली – पृ0सं0 –55
9. शिवानी – किशनुली – पृ0सं0 –61
10. शिवानी – किशनुली – पृ0सं0 –61
11. शिवानी – कृष्णकली – पृ0सं0 –88, 89
12. कृष्णा सोबती – जिन्दगीनामा – पृ0सं0 –186
13. शिवानी – चौदह फेरे – पृ0सं0 –22
14. शिवानी – चल खुसरो घर आपने – पृ0सं0 –51
15. शिवानी – सुरंगमा – पृ0सं0 –45

16. मन्नू भंडारी – आपका बंटी – पृ0सं0 –11

17. मन्नू भंडारी – आपका बंटी – पृ0सं0 –39

18. अमृता प्रीतम – पाँच बरस लम्बी सड़क (से यात्री उपन्यास) – पृ0सं0 –128

19. अमृता प्रीतम – इक सवाल – पृ0सं0 –10, 11

20. अमृता प्रीतम – इक सवाल – पृ0सं0 –91

21. अमृता प्रीतम – उन्हां दी कहाणी – पृ0सं0 –89

22. हरप्रीत कौर – तर्कस टंगिआ जंड – पृ0सं0 –35

23. हरप्रीत कौर – तर्कस टंगिआ जंड – पृ0सं0 –93, 94

24. स्वामी विवेकानंद – भारतीय नारी – पृ0सं0 –76

25. शिवानी – श्मशान चम्पा – पृ0सं0 –86

26. डा0 शीला सिन्हा – प्रसाद के नाटकों में मनोवैज्ञानिकता – पृ0सं0 –36

27. डा0 देवेश ठाकुर – प्रसाद के नारी चरित्र – पृ0सं0 –300

28. अमृता प्रीतम – डाक्टर देव – पृ0सं0 –19

29. अमृता प्रीतम – डाक्टर देव – पृ0सं0 –20

30. अमृता प्रीतम – डाक्टर देव – पृ0सं0 –67, 68

31. डा0 दलीप कौर टिवाणा – दूसरी सीता – पृ0सं0 –74

32. धर्म प्रकाश अग्रवाल – 'प्रसाद'–काव्य में भाव – व्यंजना मनोवैज्ञानिक विवेचन – पृ0सं0 –219

33. गुलाबराय – नवरस पृ0सं0 –563

34. Bertrend Rassel – Marriage & Morals – Page No. 223

35. शिवानी – कृष्णकली – पृ0सं0 –27, 28, 29

36. शिवानी – कृष्णकली – पृ0सं0 –68, 70

37. शिवानी – कैंजा – पृ0सं0 –43, 45, 46, 49

38. शिवानी – कैंजा – पृ0सं0 –54, 55

39. शिवानी – कृष्णकली – पृ0सं0 –136

40. शिवानी – कृष्णकली – पृ0सं0 –211

41. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – चिन्तामणि भाग–2 – पृ0सं0 –159

42. कृष्ण सोबती – जिन्दगीनामा – पृ0सं0 –268

43. महरून्निसा परवेज – कोरजा – पृ0सं0 –209

44. शिवानी – किशनुली – पृ0सं0 –21

45. शिवानी – किशनुली पृ0सं0 –44

46. गुलाबराय – नवरस – पृ0सं0 –563

47. शिवानी – रतिविलाप – पृ0सं0 –34

48. अमृता प्रीतम – डाक्टर देव – पृ0सं0 –17

49. अमृता प्रीतम – डाक्टर देव – पृ0सं0 –142, 143

50. अमृता प्रीतम – कोई नहीं जाणदा – पृ0सं0 –13

51. अमृता प्रीतम – कोई नहीं जाणदा – पृ0सं0 –33

52. रामवृक्ष बेनीपुरी – पतितों के देश में – पृ0सं0 –83

53.	हंसराज भाटिया	–	असामान्य मनोविज्ञान	– पृ0सं0 –80
54.	अमृता प्रीतम	–	अॅक दा बूटा	– पृ0सं0 –22
55.	अमृता प्रीतम	–	उनचास दिन	– पृ0सं0 –95
56.	अमृता प्रीतम	–	उनचास दिन	– पृ0सं0 –173
57.	अमृता प्रीतम	–	धरती सागर ते सीपियां	पृ0सं0 –51
58.	डा0 सावित्री डागा	–	आधुनिक हिन्दी मुक्तक काव्य में नारी	– पृ0सं0 –184
59.	मृदुला गर्ग	–	उसके हिस्से की धूप	– पृ0सं0 –94
60.	मृदुला गर्ग	–	मैं और मैं	– पृ0सं0 –167
61.	निरुपमा सेवती	–	पतझड़ की आवाजें	– पृ0सं0 –97
62.	अमृता प्रीतम	–	जयश्री	– पृ0सं0 –23,24
63.	डा0 शकुन्तला शर्मा	–	जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मूल्यांकन	– पृ0सं0 –102
64.	अमृता प्रीतम	–	धरती सागर ते सीपियां	– पृ0सं0 –63
65.	धर्म प्रकाश अग्रवाल	–	'प्रसाद' काव्य में भाव–व्यंजना मनोवैज्ञानिक विवेचन	पृ0सं0 –301
66.	शिवानी	–	गैंडा	– पृ0सं0 –16,17
67.	रविन्द्र नाथ ठाकुर	–	विचित्र प्रबन्ध (स्त्री पुरुष)	– पृ0सं0 –217
68.	डा0 सावित्री डागा	–	आधुनिक हिन्दी मुक्तक काव्य में नारी	– पृ0सं0 –167

69.	अमृता प्रीतम	–	दूसरी मंजिल	– पृ0सं0 –127
70.	अमृता प्रीतम	–	दूसरी मंजिल	– पृ0सं0 –138
71.	अमृता प्रीतम	–	दिल्ली दीआं गलियां	– पृ0सं0 –98
72.	विलियम मैक्डूगल	–	एन इट्रोडकशन टू सोशल साइकोलॉजी	– पृ0सं0 –267, 268
73.	शिवानी	–	श्मशान चम्पा	– पृ0सं0 –34, 35,36
74.	शिवानी	–	श्मशान चम्पा	– पृ0सं0 –125
75.	शिवानी	–	कृष्णकली	पृ0सं0 –155
76.	शिवानी	–	कृष्णकली	– पृ0सं0 –194
77.	मेहरून्निसा परवेज	–	कोरजा	– पृ0सं0 –277, 278
78.	Havelock Ellis	–	Psychology of Sex	– P.No. 275
79.	Sigmund Frevd	–	The Basic Writings of Sigmund Freud	– P.No. 653
80.	अमृता प्रीतम	–	जेबकतरे	– पृ0सं0–10
81.	अमृता प्रीतम	–	जेबकतरे	– पृ0सं0–25
82.	हैवलाक	–	यौन मनोविज्ञान	– पृ0सं0–306
83.	डॉ0 मक्खन लाल शर्मा	–	हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और समीक्षा	– पृ0सं0 –19
84.	Adma	–	Woman's work and worth	– P. No.-38
85.	डा0 दलीप कौर टिवाणा	–	सब देश पराया	– पृ0सं0 –82, 86

86. बिन्दु अग्रवाल – हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण – पृ0सं0 –117

87. निरूपमा सेवती – मेरा नरक अपना है पृ0सं0 –88

88. मन्नू भंडारी – स्वामी – पृ0सं0 –41,42

89. मन्नू भंडारी – स्वामी – पृ0सं0 –42

90. मन्नू भंडारी – स्वामी – पृ0सं0 –104

91. अमृता प्रीतम – जयश्री – पृ0सं0 –64

92. डा0 दलीप कौर टिवाणा – पीले पत्तेयाँ दी दास्तान – पृ0सं0 –62

93. हरप्रीत कौर – तर्कस टंगिआ जंड – पृ0सं0 –138

94. भरत मुनि – नाट्य शास्त्र – पृ0सं0 –448

95. रामचन्द्र शुक्ल – रस मीमांसा – पृ0सं0 –174, 175

96. उषा प्रियंवदा – शेष यात्रा – पृ0सं0 –54

97. उषा प्रियंवदा – शेष यात्रा – पृ0सं0 –66

98. शशि प्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे – पृ0सं0 –99

99. शशि प्रभा शास्त्री – अमलतास – पृ0सं0 –58

100. S. Freud – Out Line of Psycho analysis – Pg. No. -55

101. Heidbreder – Seven Psychologies – Pg. No. -382

102. डॉ0 शीला सिन्हा – प्रसाद के नाटकों में मनोवैज्ञानिकता – पृ0सं0 –59